शब्दबाणों का प्रहार

राष्ट्रबाण

मध्य भारत का सबसे लोकप्रिय अखबार

सिवनी

संपादकः संजय बघेल

शनिवार 13 दिसंबर 2025 | E-PAPER: www.rashtrabaan.in • वर्ष : 10 • अंक : 233 • पृष्ठ : 06 • मूल्य : 5.00 रुपए | www.facebook.com/rashtrabaan | www.twitter.com/rashtrabaan

@ PG 2

न्यूज ब्रीफ

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में 3 आतंकी पकड़े गए

पुंछ। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में भारतीय सेना ने शुक्रवार को 3 आतंकियों को पकड़ा है। तीनों आतंकी नियंत्रण रेखा के पास से घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे। सेना के अधिकारियों ने बताया कि गुरुवार देर रात सीमा के पास जंगल में संदिग्ध हलचल दिखी। जवानों ने इलाके क घेराबंदी शुरू कर दी। आतंकवादी भागने की कोशिश करने लगे तो कुछ देर गोलीबारी भी हुई। आखिरी में तीनों आतंकी जिंदा पकड़े गए। उनके पास से 2 एके -47 राइफलें, 3 पिस्तौल समेत विस्फोटक बरामद किए गए।

शाह और भागवत ने सावरकर की प्रतिमा का अनावरण किया

अंडमान। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के बेओडनाबाद में विनायक दामोदर सावरकर की प्रतिमा का अनावरण किया। यह प्रतिमा दक्षिण अंडमान जिले के एक पार्क में स्थापित की गई है। शाह और भागवत ने पार्क परिसर में रुद्राक्ष के पौधे भी लगाए। इसके बाद शाह और भागवत बी.आर. अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, श्री विजया पुरम पहुंचे, जहां सावरकर पर आधारित एक गीत जारी किया।

अन्ना हजारे लोकायुक्त की मांग को लेकर 30 से अनशन पर बैठेंगे

मुंबई। अन्ना हजारे ने शुक्रवार को महाराष्ट्र में लोकायुक्त अधिनियम लागू करने की मांग को लेकर आमरण अनशन की घोषणा की है। अन्ना 30 जनवरी से अपने गाँव रालेगण सिद्धि में अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठेंगे। अन्ना ने इसे अपना 'आखिरी आंदोलन' बताया है। दरअसल अन्ना 2022 में भी इस मांग को लेकर अन्ना अनशन पर बैठे थे।

वलसाड की केमिकल कंपनी में भीषण आग

बलसाड़। गुजरात में वलसाड जिले के उमरगाम तालुका की एक केमिकल कंपनी में शुक्रवार दोपहर को भीषण आग लग गई। हालांकि, समय रहते ही कंपनी के सभी कर्मचारी सुरक्षित बाहर निकल आए थे।

राष्ट्रबाण

अगर आपको नहीं मिल रहा है आपका लोकप्रिय अखबार राष्ट्रबाण तो आज ही अपने हॉकर से बोलिए या हमे कॉल कीजिए

सिर्फ 100 रुपए महीना

संपर्क : 7000427433

एक व्यक्ति की जनगणना पर 97 रुपए खर्च आएगा

• केंद्र ने जनगणना 2027 के लिए 11,718 करोड़ मंजूर किए, पहली बार डिजिटली होगा सेंसस

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

देश में 2027 में पहली बार जनगणना डिजिटली होगी। केंद्र सरकार ने शुक्रवार को कैबिनेट मीटिंग में इसके लिए 11,718.24 करोड़ रुपए की मंजूरी दी है। इसके मुताबिक एक व्यक्ति की जनगणना पर सरकार के करीब 97 रुपए खर्च होंगे।

दरअसल 2011 की जनगणना में भारत की आबादी लगभग 121 करोड़ थी। अगर इसे आधार माना जाए तो 1 व्यक्ति की गणना करने में करीब 97 रुपए खर्चा (11,718.24 करोड़ रुपए/121 करोड़ आबादी) आएगा। अगर 150 करोड़ अनुमानित जनसंख्या मानी जाए तो प्रति व्यक्ति 78 रुपए खर्च होगा। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि 30 लाख कर्मचारी डिजिटल जनगणना पूरी करेंगे। यह सीएएस सॉफ्टवेयर से होगी। इसका डिजाइन डेटा सुरक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। जनगणना दो फेज में होगी।

कोपरा के लिए एमएसपी तय

इसके अलावा कैबिनेट ने CoalSET विंडो को मंजूरी दी है। इसके तहत अलग-अलग इंडस्ट्रियल इस्तेमाल और एक्सपोर्ट के लिए कोल लिंकेज की नीलामी, सही पहुंच और रिसोर्स का सबसे अच्छा इस्तेमाल पक्का करना है। सरकार ने 2026 सीजन के लिए कोपरा के मिनिमम सपोर्ट प्राइस (एमएसपी) को मंजूरी दी। 2026 सीजन के लिए फेयर एवरेज क्वालिटी मिलिंग कोपरा के लिए एमएसपी 12,027 रुपए प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा के लिए 12,500 रुपए प्रति क्विंटल तय किया गया है। 2026 सीजन के लिए एमएसपी में पिछले सीजन के मुकाबले मिलिंग कोपरा के लिए 445 रुपए प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा के लिए 400 रुपए प्रति क्विंटल की बढ़ोतरी की गई है। सरकार ने मार्केटिंग सीजन 2014 के लिए मिलिंग कोपरा और बॉल कोपरा के लिए एमएसपी को 5,250 रुपए प्रति क्विंटल और 5,500 रुपए प्रति क्विंटल से बढ़ाए हैं।

• सरकार मनरेगा का नाम बदलेगी

केंद्र सरकार 19 साल पुरानी योजना महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) का नाम बदलकर 'पूज्य बापू ग्रामीण रोजगार योजना' करने की तैयारी कर रही है। सरकार जल्द ही इसका ऐलान कर सकती है।

• इंश्योरेंस सेक्टर में एफडीआई 100% होगी

केंद्र सरकार ने इंश्योरेंस सेक्टर में फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट (एफडीआई) की लिमिट 100% करने का बिल पास कर दिया है। पहले यह 74% था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कैबिनेट ने गुरुवार को इंश्योरेंस अमेंडमेंट बिल को मंजूरी दी। अब विदेशी कंपनियां पूरी तरह भारतीय इंश्योरेंस फर्म्स की मालिक बन सकेंगी। बिल विंटर सेशन में पेश होगा, जो 19 दिसंबर को खत्म हो रहा है।

सरकार प्रदूषण रोकने का प्लान बनाए: राहुल गांधी

रिजिजू बोले- हम संसद में चर्चा को तैयार; **अनुराग ठाकुर** बोले- तमिलनाडु सरकार सनातन धर्म विरोधी

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

कांग्रेस सांसद और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शुक्रवार को लोकसभा में वायु प्रदूषण का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा, 'हमारे देश के ज्यादातर बड़े शहर जहरीली हवा की चपेट में हैं। लाखों बच्चे फेफड़ों की बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं। लोग कैंसर से पीड़ित हो रहे हैं।' राहुल ने कहा, 'यह एक अहम मुद्दा है। मुझे पूरा यकीन है कि सरकार और हमारे बीच इस मामले पर एक सहमति होगी। इस सदन में मौजूद हर सदस्य इस बात से सहमत होगा कि प्रदूषण के कारण देश के लोगों को जो नुकसान हो रहा है, उस पर हम सभी मिलकर काम करना चाहेंगे।'

इसके जवाब में संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा- सरकार ने पहले दिन से ही अपना रुख साफ कर दिया था कि हम सभी अहम मामलों पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं। सरकार कांग्रेस और अन्य विपक्षी पार्टी के नेताओं से सुझाव लेने के लिए भी तैयार है।

भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने तमिलनाडु में दीपक जलाने की मांग पर हिंदुओं पर लाठीचार्ज का मुद्दा उठाया। उन्होंने तमिलनाडु की डीएमके सरकार पर निशाना साधते हुए कहा- तमिलनाडु सनातन धर्म के विरोध का प्रतीक बन गया है। उनके मंत्री सनातन धर्म के विरुद्ध बयान देते हैं।

कांग्रेस सांसदों की बैठक में शशि थरूर नहीं पहुंचे

सदन की कार्रवाई शुरू होने से पहले राहुल ने शुक्रवार को संसद भवन के एनेक्स एक्सटेंशन बिल्डिंग में कांग्रेस सांसदों के साथ बैठक की। इसमें शीतकालीन सत्र में कांग्रेस सांसदों के परफॉर्मेंस की समीक्षा हुई। हालांकि, केरल से पार्टी के सांसद शशि थरूर बैठक में शामिल नहीं हुए। इससे पहले 30 नवंबर को कांग्रेस की एक स्ट्रैटजिक मीटिंग में भी थरूर शामिल नहीं हुए थे। तब थरूर ने अपनी सफाई में कहा था कि वे अपनी 90 साल की मां के साथ फ्लाइट में थे। इसलिए बैठक में शामिल नहीं हो पाए।

राहुल बोले- एकदूसरे पर दोषारोपण के बजाय, जनता के बारे में बात करते हैं

राहुल गांधी ने लोकसभा में कहा- मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि हम चर्चा को इस बात पर केंद्रित न करें कि हम क्या नहीं कर पाए और आप क्या नहीं कर पाए, बल्कि सीधे इस बात पर ध्यान दें कि हम भविष्य में भारत की जनता के लिए क्या करने जा रहे हैं, हमें कौन से कदम उठाने होंगे। राहुल ने कहा- मेरा मानना है कि हम एक-दूसरे पर दोषारोपण करने के बजाय, इस एक मुद्दे पर (प्रदूषण), जिस पर हम सहमत हैं, कोई असहमति नहीं है, चर्चा करें।

अनुराग ठाकुर बोले- तमिलनाडु सनातन धर्म के विरोध का प्रतीक बना

लोकसभा में भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने तमिलनाडु में दीपक जलाने की मांग करने को लेकर हिंदुओं पर लाठीचार्ज का मुद्दा उठाया। अनुराग ठाकुर ने तमिलनाडु की षस्म्य सरकार पर निशाना साधते हुए कहा-तमिलनाडु सनातन धर्म के विरोध का प्रतीक बन गया है। उनके मंत्री सनातन धर्म के विरुद्ध बयान देते हैं। जब प्रधानमंत्री ने राम मंदिर के लिए अपने कर्तव्य निभाए, तब भी उन्होंने इसका विरोध किया। भाजपा सांसद ने कहा- अभी भी, मद्रास हाईकोर्ट की मदुरै बेंच ने तिरुप्परनकुंड्रम पहाड़ी पर कार्तिकेय दीपम का दीपक जलाने के अपने आदेश की अनदेखी करने के लिए सरकार की आलोचना की है। अदालत के निर्देशों के बावजूद श्रद्धालुओं पर लाठीचार्ज किया गया। यह स्पष्ट रूप से उल्लंघन और अवमानना है। राज्य में हिंदुओं के साथ इस तरह का भेदभाव क्यों किया जा रहा है? '

अनुराग ठाकुर के आरोपों पर हंगामा, कार्यवाही स्थगित

तमिलनाडु की डीएमके सरकार पर भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर के आरोपों के बीच लोकसभा में जमकर हंगामा हुआ। विपक्षी सांसदों ने भाजपा सांसद के आरोपों का विरोध किया। हंगामे के बीच सदन की कार्यवाही 2 बजे तक स्थगित कर दी गई है।

एविएशन मिनिस्टर बोले- हमने जरूरत पड़ने पर फ्लाइट्स के किराए पर लिमिट लगाई

लोकसभा में विमानों के किराए पर बोलते हुए सिविल एविएशन मंत्री राम मोहन नायडू ने कहा- महाकुंभ के समय हमने देखा कि पूरे देश और देश के बाहर के लोग प्रयागराज की यात्रा करना चाहते थे। उस समय रूट पर फ्लाइट्स की डिमांड काफी ज्यादा बढ़ गई थीं। ऐसे में सरकार ने प्रयागराज जाने वाली सभी फ्लाइट्स के किराए पर लिमिट लगा दी। साथ ही फ्लाइट्स की संख्या भी बढ़ा दी। पहलगाम हमले के बाद भी सरकार ने अपने स्पेशल पावर्स का इस्तेमाल करके ऐसा ही किया था। आगे कहा कि जरूरत पड़ने पर हवाई किराए पर सीमा लगानी होगी, हमने एयरलाइंस को इस बारे में बता दिया है।

करूर भगदड़ की निष्पक्ष जांच होना जरूरी : सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को करूर भगदड़ मामले में पहले दिए गए अपने निर्देश को बदलने से इनकार कर दिया। अदालत ने निर्देश दोहराते हुए कहा कि सीबीआई जांच की निगरानी करने वाले सुपरवाइजरी कमेटी के सदस्य तामिलनाडु के मूल निवासी नहीं होंगे। मामले की सुनवाई जस्टिस जेके माहेश्वरी और जस्टिस विजय बिश्नोई की बेंच ने की। विजय की पार्टी टीवीके की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लुथरा ने सीबीआई जांच के आदेश पर आपत्ति जताई थी, लेकिन कोर्ट ने कोई बदलाव नहीं किया। सुनवाई के दौरान जस्टिस महेश्वरी ने कहा, 'हम चाहते हैं कि सब कुछ निष्पक्ष हो। ' सुप्रीम कोर्ट ने 13 अक्टूबर के अपने फैसले को याद किया और बताया कि यह कमेटी जांच को पूरी तरह निष्पक्ष बनाने के लिए बनाई गई थी।

हिमंत बोले-1 लाख भी दूं तो मुस्लिम वोट नहीं देंगे

चाहे तो किडनी दे देंगे; असम में योजना नहीं विचारधारा पर मतदान होता है

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने गुरुवार कहा है कि असम में वोट योजनाओं या पैसों से नहीं, बल्कि विचारधारा और सोच से तय होते हैं। उन्होंने कहा- 'चाहे वे 10 हजार रुपए दें या 1 लाख, मुस्लिम वोटर उन्हें वोट नहीं देंगे।'

सरमा दिल्ली में एक निजी मीडिया संस्थान के कार्यक्रम में बोल रहे थे। इस दौरान उनसे पूछा गया था कि क्या उनके पास बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की तरह कोई योजना है, जिसमें महिलाओं को सीधे पैसे दिए जाते हैं, जैसे महिला रोजगार योजना में 21 लाख महिलाओं को 10,000 रुपए मिलते हैं। सरमा ने उदाहरण देते हुए कहा- एक मुस्लिम वोटर ने मेरे काम की तारीफ की। जिन्हें हम मियां मुसलमान कहते हैं। उसने कहा कि जरूरत पड़ी तो किडनी भी दे देगा, लेकिन वोट नहीं देगा। असम में अवैध आबादी बढ़ रही है और मुस्लिम लोग बढ़ रहे हैं, जो राज्य के लिए समस्या है। 2021 में मुस्लिम आबादी 38% थी और 2027 में यह 40% तक पहुंच सकती है। 1961 से मुस्लिम आबादी हर दस साल में 4-5% बढ़ रही है। अगर यह 50% से ज्यादा हो गई, तो बाकी लोग मुश्किल में पड़ सकते हैं।

हनुमानगढ़ में चौथे दिन भी इंटरनेट बंद

एथेनॉल फैक्ट्री के विरोध में बवाल के बाद 17 को महापंचायत

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

राजस्थान के हनुमानगढ़ स्थित टिब्बी (राठीखेड़ा) में आंदोलन की आग ठंडी नहीं हो रही। ड्यून एथेनॉल प्राइवेट लिमिटेड की फैक्ट्री का विरोध जारी है। चौथे दिन (शुक्रवार) भी टिब्बी में इंटरनेट बंद है। किसान नेता जगजीत सिंह जग्गी ने बताया- अखिल भारतीय किसान सभा व संयुक्त मोर्चे के बैनर तले एथेनॉल फैक्ट्री के विरोध में 17 दिसंबर को महापंचायत होगी। इसमें किसान नेता राकेश टिकैत सहित पंजाब, हरियाणा, यूपी से तमाम बड़े नेता आएंगे।

शुक्रवार को टिब्बी स्थित गुरुद्वारे में कोर कमेटी के सदस्यों की मीटिंग बुलाई गई। किसानों ने कहा- जब तक हनुमानगढ़ के कलेक्टर-एसपी का तबादला नहीं हो जाता, तब तक प्रशासन से वार्ता नहीं करेंगे। उपद्रव मामले में 107 लोगों के खिलाफ पुलिस ने मामला दर्ज किया है। 40 लोग हिरासत में लिए जा चुके हैं।

अब जानते हैं आखिर 10 दिसंबर को क्या हुआ था?

10 दिसंबर (बुधवार) को किसानों ने जिले के राठीखेड़ा गांव में निर्माणाधीन ड्यून एथेनॉल प्राइवेट लिमिटेड फैक्ट्री की दीवार तोड़ दी थी। अंदर घुसे प्रदर्शनकारियों ने ऑफिस में भी आग लगा दी थी। इस बीच पुलिस-किसानों में जमकर पत्थरबाजी हुई। बवाल में कांग्रेस विधायक सहित 70 से ज्यादा लोग घायल हुए थे। कुछ घायल टिब्बी के गुरुद्वारे में ही रुके हैं। फैक्ट्री के आसपास रहने वाले करीब 30 परिवार घर छोड़कर भाग गए हैं।

4 फ्लाइट ऑपरेशन इंस्पेक्टर सस्पेंड

इंडिगो पर एक्शन, : डीजीसीए की एयरलाइन सीईओ से दूसरे दिन पूछताछ; बेंगलुरु एयरपोर्ट से आज 54 फ्लाइट कैंसिल

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो में फ्लाइट कैंसिल को लेकर जारी संकट के बीच लगातार एक्शन हो रहा है। डीजीसीए ((नागरिक उड्डयन नियामक) ने शुक्रवार को एयरलाइन की सुरक्षा और ऑपरेशनल नियमों की गड़बड़ी के लिए जिम्मेदार 4 फ्लाइट ऑपरेशन इंस्पेक्टर को सस्पेंड कर दिया है।

इधर इंडिगो के सीईओ पीटर एल्बर्स आज लगातार दूसरे दिन डीजीसीए के सामने पेश होंगे। इससे पहले गुरुवार को पीटर से अधिकारियों ने करीब 2 घंटे की पूछताछ की थी। इसमें ऑपरेशंस, क्रू मैनेजमेंट, रिफंड, मुआवजे से जुड़े सवाल-जवाब किए गए।

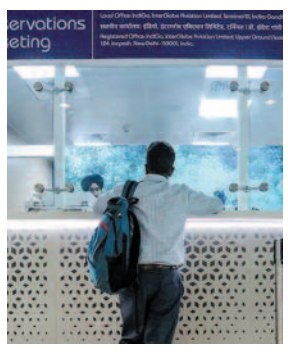

वहीं बेंगलुरु एयरपोर्ट से शुक्रवार को इंडिगो की 54 फ्लाइट कैंसिल हुई हैं। इनमें 31 आने वाली (अराइवल) और 23 जाने वाली (डिपार्चर) फ्लाइट शामिल हैं। इससे पहले गुरुवार को दिल्ली और बेंगलुरु एयरपोर्ट पर 200 से ज्यादा उड़ानें रद्द हुई थीं।

गोपीनाथ बोले- इंडिगो संकट ओवरकॉन्फिडेंस का नतीजा

इस बीच, देश में कम किराए वाली विमान सेवा शुरू करने वाले कैप्टन गोपीनाथ ने कहा कि इंडिगो संकट शायद इसलिए बढ़ा, क्योंकि एयरलाइन संचालकों में घमंड और ओवरकॉन्फिडेंस आ गया था। इसलिए एयरलाइन हालात नहीं समझ पाई।

इंदौर में तापमान 4.5 डिग्री, 10 साल का रिकॉर्ड टूटा; उत्तराखंड में नदी-नाले, झरने जमे

राजस्थान के 9 शहरों में पारा 10 डिग्री से नीचे पहुंचा

राष्ट्रबाण | नईदिल्ली | एजेंसी | rashtrabaan.in

मध्य प्रदेश में कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। इंदौर में सर्दी के पिछले 10 साल का रिकॉर्ड टूट गया। यहां गुरुवार रात न्यूनतम तापमान 4.5डिग्रीदर्ज किया गया। इससे पहले दिसंबर, 2015 में 7डिग्री का तापमान दशक का सबसे कम तापमान था।

राजस्थान के 9 शहरों में गुरुवार को तापमान 10डिग्री से नीचे चला गया। सीकर के फतेहपुर में सबसे कम तापमान 4डिग्री दर्ज किया गया। नागौर में 5डिग्री , सीकर में 5.5डिग्री और लूणकरणसर में 5.6डिग्री पारा रिकॉर्ड हुआ। राजधानी जयपुर में तापमान 10.7डिग्री दर्ज किया गया।

उत्तराखंड में पिछले कुछ दिनों से बर्फबारी के बाद अब पाला गिर रहा है। इससे नदी, नाले और झरने जम गए हैं। चमोली और पिथौरागढ़ में लोगों के घरों में पाइपों में भी पानी जम गया। वहीं हरिद्वार, हल्द्वानी और रुद्रपुर के कुछ हिस्सों में घने कोहरा देखने को मिल रहा है।

राजस्थान : बारिश का अलर्ट, क्रिसमस के बाद बढ़ेगी सर्दी; माउंट आबू में सबसे ज्यादा सर्दी, 3 डिग्री तापमान

राजस्थान के सभी जिलों में गुरुवार को आसमान साफ रहा और धूप खिली रही। कुछ शहरों के अधिकतम तापमान में भी थोड़ी बढ़ोतरी हुई। इससे ठिठुरन से राहत मिली। बाड़मेर में सबसे अधिक अधिकतम तापमान 32 डिग्री दर्ज हुआ। उत्तर भारत में वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव हुआ है। इसके प्रभाव से राज्य के कुछ हिस्सों में हल्की बारिश की संभावना है। मौसम विभाग ने बताया कि 25 दिसंबर के बाद सर्दी बढ़ने की संभावना है।

मध्य प्रदेश : पचमढ़ी से भी ठंडा इंदौर, पारा 5डिग्री से नीचे

मध्य प्रदेश में लगातार तापमान गिर रहा है। इससे कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। इंदौर में राज्य के इकलौते हिल स्टेशन पचमढ़ी से भी ज्यादा सर्दी पड़ रही है। यहां गुरुवार रात न्यूनतम तापमान 4.5 डिग्री पर पहुंच गया। यह पिछले 10 साल में सबसे कम तापमान है। वहीं, पचमढ़ी में पारा 4.8 डिग्री रहा। मौसम विभाग ने शुक्रवार को भोपाल, इंदौर सहित 5 जिलों में शीतलहर का अलर्ट जारी किया है।

मोदी की टैरिफ नीति के आगे झुका अमेरिका

रिश्ते सुधारने को ट्रंप अब भारत के साथ बनाना चाहते हैं नया 'C-5 सुपरक्लब'

राष्ट्रबाण

वाशिंगटन. भारत पर हैवी टैरिफ लगाने वाला अमेरिका पीएम मोदी की कूटनीति के आगे आखिरकार नतमस्तक होता दिख रहा है. राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप अब हाई टैरिफ की वजह से भारत के साथ बिगड़े रिश्ते को बैलेंस करने के लिए 5 महाशक्तिशाली देशों का नया C-5 सुपरक्लब बनाना चाहते हैं. ट्रंप इस सुपरक्लब में भारत को प्रमुख शक्ति के रूप में शामिल करना चाहते हैं. यह दावा अमेरिकी प्रकाशन पॉलिटिको की रिपोर्ट में किया गया है. इस सुपर क्लब में भारत-अमेरिका के अलावा रूस, चीन और जापान को शामिल करने की बात कही गई है.

चीन और रूस के साथ भी पावर बैलेंस करना चाहता है अमेरिका

ट्रंप के इस प्लान से साफ है कि वह भारत को साधने के साथ ही साथ चीन और रूस के साथ भी अपने रिश्तों को सुधारना चाहता है. ताकि पूर्वी एशिया में अमेरिका अपनी खोई हुई इमेज को फिर से सुधार सके और भारत, रूस व चीन जैसे देशों के साथ दुश्मनी के आयाम को कम कर सके.

पॉलिटिको की रिपोर्ट में और क्या है?

पॉलिटिको की रिपोर्ट के अनुसार डोनाल्ड ट्रंप कथित तौर पर एक नया एलीट 'C5' यानी 'कोर फाइव' वैश्विक शक्ति समूह बनाने पर विचार कर रहे हैं, जिसमें अमेरिका, रूस, चीन, भारत और जापान शामिल होंगे. यह मौजूदा यूरोप-प्रधान G7 और अन्य लोकतंत्र-आधारित धनी देशों के समूहों को दरकिनार कर देगा. हालांकि अभी तक इस पर कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, लेकिन अमेरिकी प्रकाशन पॉलिटिको ने रिपोर्ट किया कि इस नए 'हार्ड-पावर' समूह का विचार पिछले हफ्ते व्हाइट हाउस द्वारा जारी राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति के लंबे अप्रकाशित संस्करण में सामने आया था.

क्या है ट्रंप का मकसद

रिपोर्ट के अनुसार नई संस्था का मकसद एक ऐसा प्रमुख शक्तियों का समूह बनाना है जो G7 की उन शर्तों से बंधा न हो कि सदस्य देश अमीर भी हों और लोकतांत्रिक भी. इस रणनीति में प्रस्तावित 'कोर फाइव' (C5) में संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, रूस, भारत और जापान शामिल हैं. यानी वे देश जिनकी आबादी 10 करोड़ से ज्यादा है.

नये C5 में यूरोप की कोई जगह नहीं

उन्होंने नोट किया कि इस सैद्धांतिक C5 में यूरोप की कोई जगह नहीं है, "जिससे यूरोपीय लोगों को लगेगा कि यह प्रशासन रूस को यूरोप में अपना प्रभाव क्षेत्र रखने वाली प्रमुख शक्ति मानता है.

C5 का पहला प्रस्तावित एजेंडा

C5 का पहला प्रस्तावित एजेंडा मध्य पूर्व में सुरक्षा, खासकर इज़रायल और सऊदी अरब के बीच संबंधों का सामान्यीकरण करना है. रिपोर्ट के अनुसार व्हाइट हाउस ने इस दस्तावेज़ के अस्तित्व से इनकार किया है. प्रेस सेक्रेटरी हन्नाह केली ने जोर दिया कि 33 पेज की आधिकारिक योजना का कोई "वैकल्पिक, निजी या गुप्त संस्करण" नहीं है.

वेनेजुएला और अमेरिका में चरम पर पहुंचा तनाव

मादुरो की मदद को आ गए पुतिन; ट्रंप के खेमे में खलबली

राष्ट्रबाण

मॉस्को. अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा वेनेजुएला का तेल टैंकर युक्त जहाज जब्त किए जाने के बाद से दोनों देशों में तनाव चरम पर पहुंच गया है. अमेरिकी नौसेना ने 2 दिन पहले कैरेबियन सागर में वेनेजुएला की जहाज पर कमांडो कार्रवाई को अंजाम देकर अपने कब्जे में ले लिया था. ट्रंप ने इसे अपनी बड़ी जीत बताया था. वहीं वेनेजुएला के राष्ट्रपति मादुरो ने इसे संप्रभुता का उल्लंघन और अमेरिका की डकैती करार दिया था. ऐसे में दोनों देशों के बीच तनाव पहले से कई गुना बढ़ गया है. इस बीच मादुरो की मदद करने रूस के राष्ट्रपति पुतिन की एंट्री हो चुकी है. पुतिन का यह कदम अमेरिका में खलबली की वजह बन सकता है.

पुतिन ने मादुरो से की बात

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार को वेनेजुएला के नेता निकोलस मादुरो और ट्रम्प प्रशासन के बीच बढ़ते तनाव के बीच "वेनेजुएला के लोगों के साथ एकजुटता" व्यक्त की. क्रेमलिन ने बयान में कहा कि पुतिन ने मादुरो के साथ फोन पर बात की और वेनेजुएला के नेता की नीति का समर्थन दोहराया जो "बढ़ते बाहरी दबाव के सामने राष्ट्रीय हितों और संप्रभुता की रक्षा" करती है. यह कॉल उस दिन के बाद आया जब अमेरिकी सेनाओं ने वेनेजुएला के तट से एक तेल टैंकर जब्त कर लिया, जो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प प्रशासन की मादुरो पर दबाव बढ़ाने की नवीनतम रणनीति है.

अमेरिका ने मादुरो पर लगाया है नार्को-आतंकवाद का आरोप: मादुरो पर अमेरिका में नार्को-आतंकवाद के आरोप लगे हैं. गुरुवार को कांग्रेस के समक्ष गवाही के दौरान होमलैंड सिक्योरिटी सेक्रेटरी क्रिस्टी नोएम ने जहाज़ की जब्ती को क्षेत्र में ट्रम्प प्रशासन के नशीली दवाओं के खिलाफ अभियान से जोड़ा. अमेरिका ने दशकों में क्षेत्र में अपनी सबसे बड़ी सैन्य उपस्थिति बढ़ाई है और कथित ड्रग तस्करी वाली नावों पर घातक हमले किए हैं.

कौन हो सकता है यूपी बीजेपी का नया प्रदेश अध्यक्ष?

सामने आया यह नाम, केंद्रीय नेतृत्व की भी है पहली पसंद

राष्ट्रबाण

लखनऊ. उत्तर प्रदेश में नए बीजेपी अध्यक्ष के नाम को लेकर बड़ी खबर सामने आई है. सूत्रों के हवाले से महाराजगंज से भाजपा सांसद पंकज चौधरी यूपी बीजेपी के नए प्रदेश अध्यक्ष हो सकते हैं. ओबीसी वर्ग में कुर्मी बिरादरी से पंकज चौधरी आते हैं. इस रेस में सबसे आगे केंद्रिय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ही चल रहे हैं.
पंकज चौधरी केंद्रीय नेतृत्व की भी पसंद बने हुए हैं. यूपी के नए बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव को लेकर शनिवार को लखनऊ में नामांकन होगा. परसो इसकी घोषणा की जाएगी. हालांकि, औपचारिक ऐलान बाकी है. यूपी बीजेपी के अध्यक्ष के लिए सबसे प्रबलत दावेदार में पंकज चौधरी का ही नाम चल रहा है. पंचायत और विधानसभा चुनाव के लिए है महत्वपूर्ण बीजेपी ने नए प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव की प्रक्रिया शुरू कर दी है.

अभी भूपेंद्र सिंह चौधरी हैं बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष

बता दें कि वर्तमान में यूपी बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी हैं. उनका कार्यकाल जनवरी 2025 में समाप्त हो चुका था, जिसके बाद से पद खाली पड़ा हुआ है. हालांकि, आधिकारिक रूप से उन्हें ही वर्तमान अध्यक्ष माना जा रहा है, जब तक यूपी बीजेपी को नया प्रदेश अध्यक्ष नहीं मिल जाता है.

अमृतसर के कई स्कूलों को बम से उड़ाने की मिली धमकी

राष्ट्रबाण

चंडीगढ़. अमृतसर के कई प्राइवेट स्कूलों में शुक्रवार सुबह बम की धमकी वाले ईमेल मिलने से अफरा-तफरी मच गई. इससे स्टूडेंट्स, पेरेंट्स और स्टाफ में दहशत फैल गई. धमकी भरे ईमेल में दावा किया गया था कि उनके कैंपस में बम रखा गए हैं. ये मैसेज कई जाने-माने स्कूल प्रिंसिपल और मैनेजमेंट टीम को मिले. सभी ने एक जैसे पैटर्न और शब्दों का इस्तेमाल किया गया था. इसकी सूचना स्कूलों ने तुरंत पुलिस को दी और इमरजेंसी सेफ्टी प्रोटोकॉल शुरू किए.
जिले के सभी स्कूल बंद करने के आदेश: धमकी की सूचना मिलते ही डीसी अमृतसर ने जिले के सभी स्कूलों को तुरंत बंद करने के आदेश दिए हैं. बच्चों की सुरक्षा को देखते हुए प्रशासन ने स्कूल बंद करने का फैसला लिया. डीसी अमृतसर ने स्कूलों को तुरंत खाली करने का भी आदेश दिया है. बॉर्डर इलाकों में स्कूल खाली कराए जा रहे हैं. माता-पिता को मैसेज भेजे जा रहे हैं कि वे अपने बच्चों को जल्द से जल्द स्कूलों से निकाल लें.

फास्ट ट्रैक

बालाघाट में शिवलिंग का अपमान

राष्ट्रबाण

बालाघाट. मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में एक शिवलिंग के ऊपर जलपात्र में मटन ग्रेवी डालने से भक्तों में आक्रोश पनप गया और उन्होंने नाराजगी जताई है. धार्मिक भावना को ठेस पहुंचाने वाले इस मामले में यह बात सामने आई कि जलपात्र से ग्रेवी नीचे शिवलिंग पर गिर रही थी. जानकारी में आया कि जल चढ़ाने की मटकी में भी मटन का मिश्रण अर्थात ग्रेवी रखी मिली है जो कि प्लास्टिक बोतल में लाकर उसमें डाली गई है. वहीं पुलिस ने आरोपी युवक योगेश नागवंशी निवासी स्नेह नगर बालाघाट को गिरफ्तार कर लिया है.दरअसल, घटना कोतवाली थाना क्षेत्र के गर्रा शंकरघाट की है. रोज की तरह स्थानीय निवासी गजानंद पटले अन्य साथी के साथ पहुंचे और पूजा कर रहे थे.

हर जंग के बाद एक तानाशाह

क्या आसिम मुनीर को झेलने के लिए तैयार है पाकिस्तान!

राष्ट्रबाण

नई दिल्ली. पाकिस्तान की राजनीतिक-सैन्य इतिहास की किताबें खोलें तो एक पैटर्न साफ नजर आता है. यहां भारत के खिलाफ हर बड़ी जंग या सैन्य अभियान के बाद देश में एक तानाशाह उभरता है. 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद जनरल जिया-उल-हक ने सत्ता हथिया ली, कारगिल युद्ध के बाद जनरल परवेज मुशर्रफ ने तख्तापलट कर दिया, और अब ऑपरेशन सिंदूर के बाद आसिम मुनीर तानाशाह बनने की राह पर चल चुका है. आसिम मुनीर का पहले तो फील्ड मार्शल बनना और फिर संविधान संशोधन द्वारा चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज (CDF) बनना इसी की ओर इशारा है.

पाकिस्तान की आजादी के 78 सालों में से 33 साल सैन्य तानाशाहों के शासन में गुजरे हैं. पहला बड़ा उदाहरण 1958 में जनरल अयूब खान का तख्तापलट था, इसी बीच 1965 की भारत-पाकिस्तान की लड़ाई में अयूब पर दबाव बढ़ा, लेकिन चूंकि वह खुद ही मिलिट्री तानाशाह थे इसलिए वे प्रेशर झेल गए.

1971 की लड़ाई, अशांति और तख्तापलट

लेकिन 1971 का युद्ध एक टर्निंग पॉइंट साबित हुआ. इस युद्ध में पाकिस्तान की हार और बांग्लादेश का जन्म हुआ, पाकिस्तान को ये हार जनरल याह्या खान के नेतृत्व में ही झेलनी पड़ी थी. उनकी पाकिस्तान में खूब बेइज्जती हुई. देश में तख्तापलट की अफवाहें चल रही थी. ऐसा लग रहा था सैन्य अधिकारियों का एक ग्रुप कभी भी तख्तापलट कर सकता है. 1971 में पाकिस्तान की हार 16 दिसंबर को हुई थी. याह्या खान ने आगे की अशांति को रोकने के लिए 20 दिसंबर 1971 को राष्ट्रपति पद और सरकार की बागडोर को उस समय की शक्तिशाली और लोकप्रिय पीपुल्स पार्टी के महत्वाकांक्षी नेता जुल्फिकार अली भुट्टो को सौंप दी.

गोलवलकर, जिनके आगे खुद को 'नकली' सरसंघचालक कहा

राष्ट्रबाण

नई दिल्ली. गृहमंत्री अमित शाह ने गुरुवार 10 दिसंबर को बालासाहब देवरस की जयंती पर उनके लिए एक्स पर पोस्ट की तो बालासाहब का वो ऐतिहासिक बयान लिखा, जिसने संघ के खिलाफ दलितों को लेकर लगने वाले आरोपों को हमेशा के लिए खारिज कर दिया. बालासाहब देवरस ने 8 मई 1974 को पुणे की प्रसिद्ध वसंत व्याख्यानमाला में 'सामाजिक समरसता एवं हिंदू एकीकरण' विषय पर कहा था कि, "अगर अस्पृश्यता पाप नहीं है तो दुनिया में कुछ भी पाप नहीं है." ऐसा नहीं है कि उनसे पहले के सरसंघचालकों ने इस विषय पर कुछ कहा नहीं लेकिन जिस तरह से दलितों के विषयों को प्रमुखता से बालासाहब ने रखा और देश भर में जो संदेश गया, वैसा जरूर पहले नहीं हुआ था. शाखा में उन सबको जोड़ना, उनको घर पर लाकर साथ भोजन करना, उस दौर में आसान नहीं था. बाद में सामाजिक समरसता दिवस और सेवा भारती जैसे संगठन के जरिए उन्होंने दलितों के उद्धार के लिए जो काम किए.

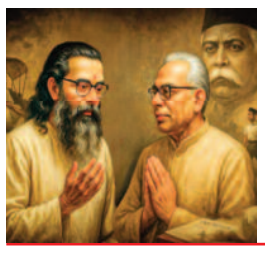

"दलित नेताओं की नाराजगी बिल्कुल सही है'

देवरस के बयान के बाद संघ की प्रतिनिधि सभा में भी आरक्षण को लेकर प्रस्ताव आया. इस मौके पर बालासाहब ने कहा था, "दलित नेताओं की भाषा आक्षेपपूर्ण है, यह सही है, किंतु हम सभी लोग यदि दलित समाज के सदस्य होते, अनेक वर्षों तक सामाजिक अत्याचार, विषमता, अन्याय, असहनीय वेदना, दुख, अपमान आदि सहना पड़ता तो हम किस भाषा में बोलते, इस पर विचार कर प्रस्ताव का निर्णय करो" और प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ. उनका अपना घर नागपुर में पिछड़े दलित परिवारों से घिरा हुआ था.

आय से अधिक संपत्ति मामले में EOU की कार्रवाई

बैंक अधिकारी के 6 ठिकानों पर छापेमारी

राष्ट्रबाण

पटना. बिहार में भ्रष्टाचार के खिलाफ आर्थिक अपराध इकाई (EOU) ने एक और बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया है. शुक्रवार सुबह से पाटलिपुत्र सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक में विकास पदाधिकारी के पद पर कार्यरत भवेश कुमार सिंह के छह ठिकानों पर एक साथ छापेमारी शुरू की गई. कार्रवाई आय से अधिक संपत्ति अर्जित करने के आरोपों के आधार पर की जा रही है. EOU के शुरुआती आकलन के अनुसार भवेश कुमार सिंह ने वैध आय के मुकाबले करीब 60 फीसदी अधिक अवैध संपत्ति इकट्ठा की है.

आय से अधिक संपत्ति मामले में 6 जगहों पर छापेमारी

EOU की टीम ने पटना सहित कई जिलों में स्थित उनके आवास, दफ्तर और अन्य संपत्तियों पर छापेमारी की है. कार्रवाई के दौरान टीम बैंक खाते, संपत्ति के कागजात, निवेश सहित कई दस्तावेजों की जांच कर रही है. अधिकारियों का कहना है कि छापेमारी में निकलने वाले सबूत भवेश कुमार के खिलाफ केस को और मजबूत करेंगे. सूत्रों के मुताबिक, EOU को लंबे समय से भवेश कुमार की संपत्ति में असामान्य वृद्धि की जानकारी मिल रही थी. जांच अधिकारियों ने बताया कि छापेमारी के दौरान अलग-अलग एंगल से उनकी संपत्ति की जांच की जा रही है जिसमें जमीन, मकान, निवेश और चल-अचल संपत्ति शामिल है.

देहरादून से दुबई तक पहुँचने वाला 22 करोड़ का नेटवर्क

राष्ट्रबाण

कानपुर. कानपुर पुलिस के हत्थे चढ़ चुके महाठग रविंद्र नाथ सोनी की कहानी किसी बॉलीवुड फिल्म की स्क्रिप्ट से कम नहीं. गिरफ्तारी के बाद एसआईटी के सामने वह खुद को बेचारा, कंगाल और कचौड़ी का ठेला चलाकर परिवार पालने वाला आदमी बताता रहा.

देहरादून वाले फ्लैट से शुरू हुई परतें खुलने की कहानी

कानपुर में गिरफ्तारी के बाद एसआईटी ने उसे रिमांड पर लिया और सबसे पहले देहरादून पहुंची, जहां उसका आलीशान फ्लैट था. इस घर में उसकी पत्नी और बेटी रहती थीं. पुलिस को वहां जो उम्मीद थी, वह नहीं मिला क्योंकि सोनी पहले ही जरूरी दस्तावेज गायब कर चुका था. लेकिन पूरे फ्लैट की जांच करते-करते पुलिस को उसकी आर्थिक पहुंच की झलक मिल गई. एक-एक करके टीम को पता चला कि दिल्ली के करोल बाग में उसकी दुकानें, एनसीआर में लग्ज़री फ्लैट, दुबई में करोड़ों की कीमत के दो अपार्टमेंट और दुबई के दो बैंक खातों में भारतीय मुद्रा के अनुसार करोड़ों रुपये जमा है.

भारत तैयार खरीद बढ़ाने को, लेकिन US एग्री पर सख्त रोक

राष्ट्रबाण

नई दिल्ली. भारत और अमेरिका के बीच ट्रेड डील पर बड़ा अपडेट सामने आया है. सरकारी सूत्रों के मुताबिक, भारत ने अमेरिका से कई सेक्टर्स पर डील करने के लिए सहमति जाहिर की है, लेकिन अभी एग्रीकल्चर सेक्टर पर सहमति नहीं बन पाई है.
सरकारी सोर्स के अनुसार, भारत ने ट्रेड डील के तहत US से एनर्जी प्रोडक्ट खरीदने का वादा किया है. इसके अलावा, डिफेंस इक्विपमेंट खरीदने और एविएशन इक्विपमेंट खरीदने पर भी सहमति जाहिर की है. वहीं भारत का टारगेट है कि यूएस डील से पहले 25 फीसदी एक्स्ट्रा टैरिफ को हटाया जाए. इस डील के तहत दोनो देशों का लक्ष्य व्यापारिक संबंधों को संतुलित करना और टैरिफ विवादों को हल करना है. भारत चाहता है कि डील से पहले अमेरिका एक्स्ट्रा 25 फीसदी टैरिफ को हटा दे, ताकि भारतीय वस्तुओं की अमेरिकी बाजार में पहुंच फिर बढ़ सके. इसके बाद ट्रेड डील के अगले स्टेप में भारत बाकी 25 फीसदी टैरिफ में भी कटौती की मांग रख सकता है.

रेसिप्रोकल टैरिफ भी कम कराने का लक्ष्य

अमेरिका ने भारत पर अभी 50 फीसदी का टैरिफ लगाया है. 25 फीसदी रेसिप्रोकल टैरिफ और 25 फीसदी एक्स्ट्रा टैरिफ. ऐसे में सरकारी सूत्रों का कहना है कि भारत यूएस से डील से पहले 25 फीसदी एक्स्ट्रा टैरिफ तो हटाने को कहेगा ही. साथ ही रेसिप्रोकल टैरिफ 25 फीसदी को भी कम करने को कह सकता है.

एग्रीकल्चर पर राजी नहीं भारत

Informist न्यूज एजेंसी के मुताबिक, सरकारी सूत्रों ने कहा कि अमेरिका से व्यापार वार्ता के दौरान भारत ने एग्रीकल्चर सेक्टर को साइड में रख दिया है और उसपर नेगोशिएशन नहीं करना चाहता है. सीधे शब्दों में कहें तो भारत ने अमेरिका कृषि उत्पादों को भारतीय बाजारों में एंट्री देने से मना कर दिया है. भारत का मानना है कि अमेरिकी कृषि उत्पादों को अनुमति देने से घरेलू किसानों पर प्रतिस्पर्धा का दबाव बढ़ सकता है और उनकी कमाई कम हो सकती है. इस कारण इस ट्रेड डील में एग्रीकल्चर को शामिल नहीं किया गया है.

पहले 'काफिर' घोषित किए गए भुट्टो

फिर जिया ने किया तख्तापलट

राष्ट्रबाण

नई दिल्ली. पाकिस्तान की राजनीतिक-सैन्य इतिहास की किताबें खोलें तो एक पैटर्न साफ नजर आता है. यहां भारत के खिलाफ हर बड़ी जंग या सैन्य अभियान के बाद देश में एक तानाशाह उभरता है. 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के बाद जनरल जिया-उल-हक ने सत्ता हथिया ली, कारगिल युद्ध के बाद जनरल परवेज मुशर्रफ ने तख्तापलट कर दिया, और अब ऑपरेशन सिंदूर के बाद आसिम मुनीर तानाशाह बनने की राह पर चल चुका है. आसिम मुनीर का पहले तो फील्ड मार्शल बनना और फिर संविधान संशोधन द्वारा चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज (CDF) बनना इसी की ओर इशारा है.
पाकिस्तान की आजादी के 78 सालों में से 33 साल सैन्य तानाशाहों के शासन में गुजरे हैं. पहला बड़ा उदाहरण 1958 में जनरल अयूब खान का तख्तापलट था, इसी बीच 1965 की भारत-पाकिस्तान की लड़ाई में अयूब पर दबाव बढ़ा, लेकिन चूंकि वह खुद ही मिलिट्री तानाशाह थे इसलिए वे प्रेशर झेल गए. भुट्टो को काफिर घोषित किया गया बात यहां तक बिगड़ गई थी कि कुछ दलों ने भुट्टो को काफिर घोषित कर दिया.1977 के चुनावी धांधली विरोधी आंदोलन के दौरान भुट्टो को स्पष्ट रूप से "काफिर" घोषित किया गया था, और यह घोषणा विपक्षी गठबंधन जुल्फिकार अली भुट्टो को पाकिस्तान नेशनल अलायंस (PNA) 'काफिर' करार दिया था.

1971 की लड़ाई, अशांति और तख्तापलट

लेकिन 1971 का युद्ध एक टर्निंग पॉइंट साबित हुआ. इस युद्ध में पाकिस्तान की हार और बांग्लादेश का जन्म हुआ, पाकिस्तान को ये हार जनरल याह्या खान के नेतृत्व में ही झेलनी पड़ी थी. उनकी पाकिस्तान में खूब बेइज्जती हुई. देश में तख्तापलट की अफवाहें चल रही थी. ऐसा लग रहा था सैन्य अधिकारियों का एक ग्रुप कभी भी तख्तापलट कर सकता है. 1971 में पाकिस्तान की हार 16 दिसंबर को हुई थी. याह्या खान ने आगे की अशांति को रोकने के लिए 20 दिसंबर 1971 को राष्ट्रपति पद और सरकार की बागडोर को उस समय की शक्तिशाली और लोकप्रिय पीपुल्स पार्टी के महत्वाकांक्षी नेता जुल्फिकार अली भुट्टो को सौंप दी.

आस्था

तय हुई शिलान्यास की तारीख

पश्चिम बंगाल में बाबरी मस्जिद के बाद राम मंदिर भी बनेगा

राष्ट्रबाण

कोलकाता. मुर्शिदाबाद में बाबरी मस्जिद का शिलान्यास होने के बाद कोलकाता में राम मंदिर बनाने का फैसला किया गया है. संजय पायरा को इस काम के लिए कन्वीनर की जिम्मेदारी दी गई है. हालांकि, इस मंदिर को बनाने वाले लोगों का राजनीति से कोई संबंध नहीं होगा. वहीं, हुमायूं कबीर ने पहले ही अपनी राजनीतिक पार्टी बनाने और असदुद्दीन ओवैसी के साथ गठबंधन करने का ऐलान कर दिया है.

बाबरी मस्जिद का शिलान्यास 6 दिसंबर को मुर्शिदाबाद में हुआ था. विधायक हुमायूं कबीर विवादों के बावजूद पीछे नहीं हटे और मस्जिद की नींव रखी. इसके बाद कोलकाता में राम मंदिर निर्माण के पोस्टर लगा दिए गए हैं. साल्टलेक करुणामयी, सिटी सेंटर, समेत कई जगहों पर राम मंदिर बनाने के बैनर लगाए गए. संजय पायरा मंदिर बनाने के कन्वीनर हैं. इंडिया टीवी से बात करते हुए उन्होंने मंदिर के शिलान्यास की तारीख बताई. हालांकि, संजय ने साफ कर दिया है कि इसका कोई पॉलिटिकल कनेक्शन नहीं होगा.

राम नवमी पर होगा शिलान्यास

बिधाननगर म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन एरिया समेत कई जगहों पर बैनर लगाए गए हैं. मंदिर बनाने के कन्वीनर संजय पायरा का दावा है कि 26 मार्च को राम नवमी के दिन मंदिर का शिलान्यास होगा और काम शुरू हो जाएगा. लेकिन सिर्फ मंदिर ही नहीं. उन्होंने दावा किया है कि राम मंदिर के साथ स्कूल, हॉस्पिटल और ओल्ड एज होम भी बनाए जाएंगे.

हिंदुओं से मांगा दान

संजय पायरा का दावा है कि जगह की कोई कमी नहीं होगी. उन्होंने कहा कि कई लोगों ने कहा है कि वे जमीन देंगे. जमीन है. हम सही समय पर बताएंगे कि वह कहां होगी. उन्होंने कहा कि मंदिर चार बीघा जमीन पर बनाया जाएगा. उस व्यक्ति ने यह भी कहा कि कुछ लोगों ने मूर्तियां, कुछ ने जमीन और कुछ ने पैसे देने का वादा किया है. उन्होंने हिंदुओं से 1-1 रुपए दान भी मांगा है. इस बारे में बीजेपी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राहुल सिन्हा ने बताया कि जितने भी मस्जिद निर्माण होगा उससे मुकाबले 5 राम के नाम पर मंदिर बनाया जाएगा.

राष्ट्रबाण
सिवनी, शनिवार 13 दिसंबर 2025

राजधानी राष्ट्रबाण

● बैरसिया ● हुजूर ● कोलार

नक्सलवाद खत्म कर मजबूत किया सिस्टमः सीएम

2 साल की गिनाईं उपलब्धियां ; जीतू पटवारी ने कहा- मंत्री के आसपास घूम रहे ड्रग माफिया

भोपाल| संवाददाता
rashtrabaan.in

मध्य प्रदेश की मोहन यादव सरकार के 13 दिसंबर को 2 साल पूरे हो जाएंगे। इसे भोपाल के कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुक्रवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस कर अपनी उपलब्धियां गिनाईं। सीएम ने कहा कि प्रदेश में लॉ एंड ऑर्डर सबसे बड़ी समस्या थी। छत्तीसगढ़ से लगे मध्यप्रदेश के कई इलाके नक्सलवाद से प्रभावित रहे, जहां एक साथ 17-17 पुलिसकर्मियों की हत्या तक कर दी गई। यहां तक कि एक मंत्री को घर से निकालकर थाने के पास कुल्हाड़ी से हत्या कर दी गई थी। उस समय समानांतर थाने, समानांतर कोर्ट और समानांतर सत्ता चलने लगी थी। मुख्यमंत्री ने बताया कि जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस संबंध में डेडलाइन तय की, तब सभी को लगा कि यह संभव होगा भी या नहीं। लेकिन कई पुलिस अधिकारी स्वयं आगे आए और बालाघाट में ड्यूटी की मांग की, जिससे नक्सलवाद खत्म करने में बड़ी मदद मिली। वहीं, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मुख्यमंत्री पर पलटवार किया है। कहा है कि मंत्री जगदीश देवड़ा के आसपास ड्रग माफिया घूम रहे हैं और उनका कुछ नहीं हो रहा है और बच्चों को ड्रग के मामले में फंसाया जा रहा है। मंत्री बागरी का भाई और बहनोई गांजा के कारोबार में लिप्त हैं और सरकार कोई कार्यवाही नहीं कर रही है। सीएम कहते हैं कि किसी मछली को छोड़ेंगे नहीं और मछली और मगरमच्छ को पालने वाले मंत्री विश्वास सारंग पर कार्यवाही नहीं की जाती है।

शिप्रा में स्नान हो सके, इसलिए बनाई 800 करोड़ की योजना

सीएम यादव ने कहा कि उज्जैन की शिप्रा नदी में दो तरह की चुनौतियां थीं। पिछले सिंहस्थ में साधु-संतों ने गंभीर नदी के पानी से स्नान किया था। स्नान तो हुआ और सिंहस्थ संपन्न हुआ, लेकिन शिप्रा नदी का पानी उपलब्ध नहीं था। इस बार जल संसाधन विभाग ने व्यवस्था कर दी है कि सिंहस्थ में शिप्रा नदी के जल से स्नान हो सके। इसके लिए लगभग 800 करोड़ रुपए की योजना बनाई गई है। मध्यप्रदेश में एक राज्य के अंदर दो नदियों को जोड़ने का अभियान भी शुरू किया गया है। इसके तहत गंभीर और खान नदी को मिलाने के लिए टनल बनाकर नदी से नदी जोड़ने का काम किया गया है। ऊपर खेती होती है और नीचे नदी की धारा बहती है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि भोपाल में पहले जीआईएस सुविधा उपलब्ध नहीं थी, जिसे उनकी सरकार ने लागू किया। इसके अलावा, सागर में खाद का कारखाना चालू होने से यूरिया और अन्य खाद की आपूर्ति में आसानी होगी। उन्होंने बताया कि सरकार ने न केवल व्यवस्थाएं चलाईं, बल्कि दूरदर्शी सोच के साथ ऐसे प्रोजेक्ट भी पूरे किए जो सामान्यतः लंबा समय लेते।

हमारे जवानों और नागरिकों को सलाम

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंडला, बालाघाट और डिंडोरी में नक्सली समस्या खत्म करना प्रदेश के लिए एक बड़ा उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि ‘हमारे जवानों और आम नागरिकों ने इसकी बड़ी कीमत चुकाई है, मैं उन सभी को सलाम करता हूं।’ साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अब जरूरत है कि सिस्टम को इतना मजबूत बनाया जाए कि यह समस्या दोबारा सिर न उठा सके। नदी जोड़ो अभियान पर बोलते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इन परियोजनाओं से प्रदेश में सिंचाई का रकबा तेजी से बढ़ रहा है। परस्पर सौहार्द के तहत राजस्थान और मध्यप्रदेश दोनों राज्यों में पार्वती, कालीसिंध और चंबल नदी का पानी पहुंचने से बड़ी राहत मिलेगी।

मैं यहां बैठा हूं, सीएस को वल्लभ भवन में बैठने दो

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा दो साल की उपलब्धियां बताए जाने के दौरान सीएस अनुराग जैन मौजूद नहीं थे। सीएस की गैरमौजूदगी पर मीडिया ने सवाल किया तो मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मैं थोड़ा टेढ़ा आदमी हूं। मैं यहां बैठा हूं, सीएस वल्लभ भवन में बैठे हैं। मैं तो सब कुछ बता रहा हूं। मीडिया से संबोधन के दौरान सीएम डॉ. यादव दो बार डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा को गृह मंत्री बोल गए। इसके बाद अब सीएम के संबोधन के मायने निकाले जा रहे हैं।

दो बड़े मेट्रोपॉलिटन क्षेत्र

सीएम यादव ने कहा कि, मध्यप्रदेश में शहरी विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने मध्यप्रदेश महानगर क्षेत्र नियोजन एवं विकास अधिनियम 2025 को मंजूरी दी है। इसके तहत इंदौर, उज्जैन, भोपाल, जबलपुर और ग्वालियर को मेट्रोपॉलिटन सिटी घोषित किया है। पहला इंदौर-उज्जैन-देवास-धार और दूसरा भोपाल-सीहोर-रायसेन-विदिशा-ब्यावरा विकसित होंगे। एकीकृत टाउनशिप नीति-2025 को भी स्वीकृति दी गई है। मई 2025 में इंदौर मेट्रो और दिसंबर 2025 में भोपाल मेट्रो का परिचालन शुरू होगा।

डिप्टी सीएम बोले- विकास और विरासत दोनों पर ध्यान

कॉन्फ्रेंस की शुरुआत में डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार का दो साल का कार्यकाल पूरा हो गया है। मुख्यमंत्री दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ मध्यप्रदेश को विकास के रास्ते पर ले जा रहे हैं। इन दो वर्षों में विकास और विरासत दोनों पर विशेष ध्यान दिया गया है। बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि विकास और सेवा के ये दो वर्ष अच्छे शासन, पारदर्शिता और त्वरित निर्णयों के लिए जाने जाते हैं। त्वरित कार्यवाही से भ्रष्टाचार पर भी अंकुश लगा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के विभिन्न जिलों में कैबिनेट बैठकें आयोजित करके क्षेत्रीय विकास को प्राथमिकता दी है।

भोपाल गैस त्रासदी के कचरे का निष्पादन हमने किया

मुख्यमंत्री यादव ने इंदौर की हुकुम चंद मिल का जिक्र करते हुए कहा कि 300 से 400 करोड़ के बकाया में उलझी मिल का निराकरण होने के बाद अब 70 से 80 हजार करोड़ का प्रोजेक्ट यहां लगने वाला है। उन्होंने कहा कि भोपाल गैस त्रासदी के कचरे का निष्पादन करने का काम उनकी सरकार ने किया है।

प्राइवेट से ज्यादा वेतन देंगे, ताकि एक्सपर्ट सरकारी सेवा में आएं

मुख्यमंत्री मोहन यादव ने स्वास्थ्य क्षेत्र में बढ़ती डॉक्टरों की कमी को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि, तेज गति से मेडिकल कॉलेज खुल रहे हैं तो हमको उसके हिसाब से मैनपॉवर भी चाहिए। हेल्थ सेक्टर में एक्सपर्ट नहीं मिलने की चुनौती तो है, लेकिन हमने तय किया है कि हम प्राइवेट सेक्टर से ज्यादा वेतन देकर एक्सपर्ट डॉक्टरों को सरकारी सेवाओं में आगे लाएंगे।

राजस्थानी बदमाशों ने भोपाल में ट्रक चालक को बंधक बनाया

13 घंटे कस्टडी में रखा, ऑडी कार में विदिशा से भोपाल लाए ; लेन-देन को लेकर रास्ते भर पीटा

भोपाल| संवाददाता
rashtrabaan.in

साइबर ठगों ने एक ट्रक चालक को बंधक बनाकर जमकर मारपीट की। रातभर विदिशा में बंधक बनाए रखा। आरोपी ऑडी कार से ट्रक चालक को पीटते हुए भोपाल लाए। यहां उसने शोर मचाया, जिसके बाद आरोपी कार से भाग निकले। जानकारी के अनुसार, आरोपियों ने ट्रक चालक के खाते में ऑनलाइन गेमिंग के चार लाख रुपए ट्रांसफर किए थे। पीड़ित ने तीन लाख रुपए लौटा दिए थे। एक लाख रुपए लौटाने को लेकर विवाद हुआ।

ठगी का पैसे डलवाने को लेकर हुआ था विवाद

मिसरोद थाना टीआई रतन सिंह परिहार ने बताया कि फरियादी सुनील मालवीय भानपुरा मंदसौर का रहने वाला है। वह खुद का ट्रक चलाता है। उसकी मुलाकात तीन महीने पहले राजस्थान के रहने वाले आरोपी हरिओम वैणव से हुई थी। हरिओम ने सुनील को बताया था कि वह ऑनलाइन गेम में पैसा लगाता है। कुछ लोग उसके संपर्क में है, जो इस गेम की रकम को दूसरों के खातों में ट्रांसफर कराते हैं। जिसका अकाउंट इस्तेमाल होता है, उसे हर बार रकम आने पर पांच हजार रुपए मिलेंगे। बची रकम को उनके बताए दूसरे खातों में ट्रांसफर कराना होता है। 12 दिन पहले सुनील के खाते में हरिओम ने 4 लाख रुपए ट्रांसफर कराए। रकम के खाते में आते ही नीरज की ट्रक फाइनेंस की ड्यू चल रही एक लाख रुपए की किश्त कट गई। बची तीन लाख रुपए की रकम को पीड़ित ने हरिओम के बताए खाते में ट्रांसफर कर दिया और अपनी समस्या भी बता दी। एक लाख रुपए कम मिलने पर आरोपियों ने बुधवार रात सुनील को मिलने के लिए विदिशा बुलाया। सुनील अपने साथी लखन के साथ विदिशा के एक होटल में पहुंचा। यहां आरोपियों ने उन्हें बंधक बनाकर पीटा। गुरुवार सुबह हरिओम और उसके तीन साथी उन्हें ऑडी कार से भोपाल लाए। यहां मिसरोद की एक कॉलोनी में लेकर पहुंचे। दो साथी अपार्टमेंट में एक फ्लैट में चले गए, दो उनके साथ मौजूद रहे।मौका पाकर सुनील कार से उतरा और शोर मचाना शुरू कर दिया। लोगों ने मदद करते हुए सुनील और लखन को एक कोने में बैठाया। आरोपी भाग निकले। इसके बाद डायल 112 पर कॉल कर फरियादी को मिसरोद पुलिस के सुपुर्द कर दिया। दिन भर चली जांच के बाद देर रात मामले की एफआईआर दर्ज की गई। आरोपियों की तलाश की जा रही है।

एक लाख रुपए लौटाओ नहीं तो छोड़ेंगे नहीं

पीड़ित ने पुलिस को दिए बयानों में बताया कि आरोपियों ने विदिशा से भोपाल आते समय रास्ते भर उसके साथ मारपीट की। हथियार दिखाकर उसे धमकाया, डंडे और बेल्ट से पीटा। वह लगातार परिजनों से कॉल कर एक लाख रुपए भोपाल लाकर देने की बात कर रहा था। नहीं देने की हालत में धमकी दी कि जब तक रकम नहीं मिलेगी, बंधक बनाकर रखा जाएगा।

भोपाल होकर काचेगुड़ा-मदार के बीच चलेगी स्पेशल ट्रेन

23 और 28 दिसंबर को एक-एक ट्रिप, इटारसी और भोपाल होकर चलेगी ट्रेन

भोपाल| संवाददाता
rashtrabaan.in

यात्रियों की बढ़ती मांग और सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेलवे ने काचेगुड़ा, मदार-काचेगुड़ा के बीच एक ट्रिप स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। यह विशेष ट्रेन भोपाल मंडल के महत्वपूर्ण स्टेशनों इटारसी और भोपाल होकर संचालित होगी। रेलवे का मानना है कि यह ट्रेन यात्रियों को अतिरिक्त सुविधा प्रदान करेगी। काचेगुड़ा-मदार-काचेगुड़ा स्पेशल ट्रेन (01 ट्रिप)गाड़ी संख्या 07733 काचेगुड़ा-मदार स्पेशल दिनांक 23 दिसंबर 2025 को रात 11.30 बजे काचेगुड़ा से रवाना होगी। यह ट्रेन अगले दिन इटारसी रात 9.00 बजे और भोपाल रात 11.10 बजे पहुंचेगी। इसके बाद यह तीसरे दिन दोपहर 1.00 बजे मदार स्टेशन पहुंचेगी। वापसी में 07733 मदार-काचेगुड़ा स्पेशल 28 दिसंबर को शाम 6.10 बजे मदार से प्रस्थान करेगी। दूसरे दिन यह भोपाल सुबह 10.10 बजे तथा इटारसी दोपहर 12.10 बजे पहुंचेगी। ट्रेन तीसरे दिन सुबह 10.00 बजे काचेगुड़ा पहुंचेगी।

रूट और ठहराव

इस स्पेशल ट्रेन का ठहराव मलकाजगिरी, मेडचल, कमारेड्डी, निजामाबाद, बसर, धर्माबाद, मुदखेड, नांदेड़, पूर्णा, बासमत, हिंगोली डेक्कन, वाशिम, अकोला, खंडवा, इटारसी, भोपाल, उज्जैन, रतलाम, मंदसौर, नीमच, चितौड़गढ़, भीलवाड़ा, विजयनगर, नसीराबाद और अजमेर स्टेशनों पर होगा।

भोपाल के लालघाटी फ्लाईओवर के नीचे आग लगी

लाइट-कचरे से भी आग भभकी ; 3 दमकलों ने काबू पाया

भोपाल| संवाददाता
rashtrabaan.in

भोपाल के लालघाटी चौराहे पर फ्लाईओवर के नीचे सौंदर्यीकरण के लिए लगे एसीपी (एल्युमिनियम कंपोजिट पैनल) में शुक्रवार को आग लग गई। आग ब्रिज पर लगी लाइट और कचरे से भीषण हो गई। तुरंत 3 दमकलें मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। आग की वजह से काफी देर तक ट्रैफिक भी रुका रहा। जानकारी मिलते ही बैरागढ़ से 2 और फतेहगढ़ फायर स्टेशन से एक दमकल मौके पर पहुंची। बैरागढ़ स्टेशन के फायर फाइटर मुबारिक अहमद ने बताया कि आग लगने की वजह सामने नहीं आई है। फ्लाईओवर में सौंदर्यीकरण के लिए लगे प्लाइवुड समेत अन्य सामान में पहले आग लगी थी। ऊपर लाइट के पोल में भी आग लग गई और सड़क पर कचरे की वजह से यह भभक गई। कुछ देर में आग बुझा दी गई। कोई जनहानि नहीं हुई है, लेकिन काफी नुकसान हुआ है।

वुडन फिनिश से चमका है फ्लाईओवर के नीचे का हिस्सा

फ्लाईओवर के नीचे एसीपी का उपयोग कर सौंदर्यीकरण किया गया है। एसीपी शीट का उपयोग होने से दस साल तक यह सौंदर्यीकरण बरकरार रहेगा। यहां सीएनसी (कम्प्यूटर न्यूमैरिक कंट्रोल) पद्धति से पेंटिंग भी की गई है। लालघाटी चौराहे पर पेंटिंग की थीम राजा भोज है। ब्रिज के नीचे खूबसूरत लाइटिंग भी गई है। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने यह काम किया है। बता दें कि इससे पहले इस ब्रिज पर नगर निगम कई बार स्वच्छ भारत मिशन के तहत पेंटिंग करा चुका है। जीआईएस के समय भी यहां कुछ पेंटिंग हुई थी, लेकिन वह जल्दी खराब हो गई।

मजार तक आग पहुंची : फ्लाईओवर के नीचे मजार भी है। इसके पास आग लगी। मजार तक पहुंचने के पहले ही आग काबू में आ गई।

कोहेफिजा से लालघाटी की ओर का रास्ता

फ्लाईओवर कोहेफिजा से लालघाटी की ओर का रास्ता तय करवाता है। इसके नीचे चौराहा है, जो वीआईपी रोड, लालघाटी, बैरागढ़ की तरफ और एयरपोर्ट रोड को जोड़ता है। नीचे बैरागढ़ की ओर जाने वाले रास्ते में यह आग लगी थी।

बैतूल में ठोस कचरा डंपिंग की एजीटी ने मांगी रिपोर्ट

जांच कमेटी ने पर्यावरण से जुड़ी गड़बड़ी पाई थी ; अगली सुनवाई 12 फरवरी को

भोपाल| संवाददाता
rashtrabaan.in

बैतूल के मुलताई में ठोस कचरा डंपिंग मामले में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और मुलताई नगर पालिका से रिपोर्ट मांगी है। यह रिपोर्ट 12 फरवरी तक देना होगा। इस मामले में जांच कमेटी ने पर्यावरण से जुड़ी कई गड़बड़ी पाई थी। एनजीटी की भोपाल पीठ ने विस्तृत हलफनामा और अनुपालन रिपोर्ट मांगी है। आवेदक गुड्डू पाटेकर ने याचिका दायर की थी। कहा था कि नगर पालिका मुलताई खसरा नंबर 957 (क्षेत्रफल 2.225 हेक्टेयर), राजीव गांधी वार्ड में बिना किसी वैध अनुमति के ठोस कचरे का डंपिंग कर रही है। शिकायत के बाद गठित कमेटी ने निरीक्षण में कई गंभीर पर्यावरणीय अनियमितताएं पाई थी।

एनजीटी के निर्देश

एनजीटी ने पाया कि नगर पालिका बिना किसी वैध अनुमति के संचालन कर रही है। इसलिए एमपी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड दो सप्ताह में हलफनामा दायर करें। जिसमें उल्लंघन की अवधि, इनवायरमेंट समेत कम्पंसेशन की गणना शामिल हो। हलफनामा सभी पक्षों को पहले से उपलब्ध कराया जाए। आवेदक को दो सप्ताह में ज्वाइंट कमेटी रिपोर्ट पर आपत्तियां दाखिल करने की अनुमति होगी।

महिलाएं बोलीं- बिना सहमति लगा रहे ; कांग्रेस ने भी विरोध जताया

भोपाल के बाणगंगा में स्मार्ट बिजली मीटर पर हंगामा

देवास| संवाददाता
rashtrabaan.in

भोपाल के बाणगंगा इलाके में स्मार्ट बिजली मीटर लगाने पर हंगामा हो गया। शुक्रवार को यहां बिजली कंपनी के ठेका कर्मचारी स्मार्ट मीटर लगाने पहुंचे थे। जिसका महिलाओं ने विरोध किया। कहा कि बिना सहमति के मीटर क्यों लगा रहे हैं? इधर, कांग्रेसियों ने भी जबर्दस्ती मीटर लगाने का विरोध जताया है। बाणगंगा के अलावा प्रताप नगर, हसनाथ नगर, दशहरा मैदान समेत 5 इलाकों में ठेका कंपनी के कर्मचारी मीटर लगाने पहुंचे थे। उनके विरोध में महिलाएं सामने खड़ी हो गईं। बाणगंगा की महिलाओं ने कहा कि बिना पूछे ही मीटर बदल दिया। कई घरों में ताला लगा था। फिर भी कर्मचारी मीटर लगा गए। वार्ड-24 के कांग्रेस अध्यक्ष शोएब खान ने बताया कि स्मार्ट मीटर के लिए ठेकेदार लोगों को धमका भी रहे हैं। मीटर लगाने से पहले लोगों को समझाया जाना चाहिए था, लेकिन बिजली कंपनी ने ऐसा नहीं किया।

विरोध के बाद मीटर लगाने का काम बंद किया

लोगों के विरोध के बाद यहां मीटर लगाने का काम फिलहाल बंद कर दिया गया। कर्मचारी भी लौट गए। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि मीटर जरूर लगाए जाएंगे। पूरे शहर में लग रहे हैं। पूर्व मंत्री पीसी शर्मा ने भी स्मार्ट मीटर को लेकर आपत्ति जताई।

स्मार्ट मीटर के विरोध में भोपाल में लगातार प्रदर्शन

स्मार्ट मीटर के विरोध में राजधानी भोपाल में लगातार प्रदर्शन किए जा रहे हैं। करीब 2 महीने पहले मध्यप्रदेश बिजली उपभोक्ता एसोसिएशन (एमईसीए) के बैनर तले शाहजहानी पार्क में प्रदर्शन हुआ था। जिसमें पूरे प्रदेश से उपभोक्ता जुटे थे। उन्होंने उपभोक्ता 200 यूनिट बिजली मुफ्त देने, बिजली के रेट कम करने जैसी 11 मांग भी सरकार के सामने रखी थी।

आईएएस संतोष वर्मा के विरुद्ध मंत्रालय के सामने प्रदर्शन

शंख, झालर बजाकर रैली निकाली, सरकार का ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश

भोपाल| संवाददाता
rashtrabaan.in

आईएएस संतोष कुमार वर्मा के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग को दोपहर को मंत्रालय के गेट नंबर 6 पर सकल ब्राह्मण समाज संयुक्त मोर्चा तथा सामान्य वर्ग के कर्मचारियों द्वारा शंखनाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। ब्राह्मण समाज के लोगो ने प्रशासन को जगाने के लिए मंत्रालय के सामने शंख झालर बजाकर प्रदर्शन किया। साथ ही हनुमान चालीसा पाठ किया। कार्यक्रम के पहले यह तय हुआ कि संतोष वर्मा के विरुद्ध कार्रवाई के कागज उपलब्ध नहीं करा दिए जाते तब तक आंदोलन यथावत चलता रहेगा। लेकर एक ओर 14 दिसम्बर को सीएम हाउस का घेराव करने की तैयारी है वहीं दूसरी ओर मंत्रालय के सामने आज प्रदर्शन किया गया है।

मंत्रालय अधिकारी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष सुधीर नायक ने बताया कि बेटियों के प्रति अभद्र गंदी टिप्पणी करने के और कई प्रकार के फर्जीवाड़े उजागर हो जाने के बावजूद आईएएस अधिकारी संतोष वर्मा के विरुद्ध 18 दिन बाद भी कोई कार्रवाई नहीं की गई है। अभी तक ब्राह्मण वर्ग और सामान्य वर्ग के लोग अलग-अलग स्तर पर विरोध प्रदर्शन कर रहे थे। अब संयुक्त संघर्ष मोर्चा के संयुक्त आंदोलन का यह प्रथम चरण है। संयुक्त मोर्चा का गठन हो चुका है और आंदोलन न्याय मिलने तक जारी रहेगा।

मंत्रालय के सामने किए जाने वाले प्रदर्शन की सूचना पुलिस और वल्लभ भवन प्रशासन को दे दी गई थी। आईएएस संतोष वर्मा के विरुद्ध कार्यवाही की मांग को लेकर 14 दिसम्बर को सीएम हाउस का घेराव किया जाने वाला है। इसके लिए प्रदेश के सभी जिलों से सकल ब्राह्मण समाज और सर्व समाज के लोगों को बुलाया गया है और बेटियों के प्रति अभद्र टिप्पणी करने वाले अफसर पर कार्यवाही की मांग की जाएगी।

संपादकीय

बंगाल में चिंतित करने वाला घटनाक्रम

इस तस्वीर की हमने शायद ही कल्पना की हो कि देश में कहीं पर फिर से बाबरी मस्जिद की नींव डाली जाएगी और उसमें हजारों की संख्या में लोग शामिल होंगे. तृणमूल कांग्रेस से निलंबित विधायक हुमायूं कबीर ने मुर्शिदाबाद जिले में बेलडांगा इलाके में प्रतीकात्मक तौर पर फीता काटकर मस्जिद की नींव रख दी. हुमायूं कबीर पश्चिम मुर्शिदाबाद जिले के भरतपुर से विधायक हैं. वे लंबे समय से सार्वजनिक वक्तव्य दे रहे थे कि छह दिसंबर को बाबरी मस्जिद के निर्माण की शुरुआत करेंगे. इस कारण बंगाल के अंदर और देश में असहजता का माहौल कायम हो रहा था. अलग-अलग मंचों से इसे रोकने की मांग भी की गई, किंतु मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने इसे रोकने की कोशिश नहीं की. केवल हुमायूं कबीर को पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से निलंबित कर दिया. इसे पर्याप्त नहीं कहा जा सकता.

आखिर हुमायूं कबीर के साथ मुस्लिम समुदाय के इतने लोगों के खड़े होने, रुपये देने का विश्लेषण कोई कैसे करेगा? कुछ लोग इसे पश्चिम बंगाल के आगामी विधानसभा चुनाव से जोड़ कर देख सकते हैं. अगर हुमायूं कबीर को बाबर के नाम पर वोट मिलने की उम्मीद है तो इससे खतरनाक स्थिति कुछ नहीं हो सकती. हुमायूं कबीर की सांप्रदायिक और हिंदू विरोधी मानसिकता लंबे समय से सामने है. मई 2024 में लोकसभा चुनाव के दौरान उन्होंने कहा था कि मुर्शिदाबाद में 70 प्रतिशत जनसंख्या मुस्लिम है. भाजपा के समर्थकों को भागीरथी नदी में फेंक देंगे.

कानून-व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्ध कोई भी राज्य सांप्रदायिकता भड़काने और तनाव फैलाने की योजना वाले हुमायूं कबीर जैसे व्यक्ति को गिरफ्तार करता, हिरासत में लेता या कम से कम उसे नजरबंद करता. इसके साथ ऐसे कार्यक्रम पर रोक भी लगाता. मुर्शिदाबाद का दृश्य इसके विपरीत था. ऐसा लग रहा था जैसे पुलिस उस कार्यक्रम की सुरक्षा के लिए वहां तैनात है. जब पुलिस-प्रशासन को राजनीतिक नेतृत्व से रोकने का कोई आदेश नहीं था तो वह ऐसी ही भूमिका निभाएगा.

किसी को भी कानूनी रूप से वैध जमीन पर मंदिर या मस्जिद बनाने का अधिकार है, लेकिन बाबर के नाम से मस्जिद बनाना करोड़ों हिंदुओं-सिखों की भावनाओं को चोट पहुंचाना और उनके जख्मों को कुरेदना है. यह हर दृष्टि से अस्वीकार्य है. 1529 में बाबर के सेनापति मीर बकी द्वारा अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर तोड़कर बाबरी मस्जिद निर्माण के विरुद्ध वर्षों का संघर्ष अब सबको पता है. अंततः स्वतंत्रता के बाद आंदोलन और फिर आगे न्यायिक संघर्ष से उच्चतम न्यायालय के फैसले के बाद मंदिर निर्माण किया गया. बावजूद इसके देश का एक वर्ग मानता है कि बाबर के साथ उसका जुड़ाव है, उससे प्रेरणा मिलती है और इसलिए उसके नाम की मस्जिद बनानी है. यह भारत की एकता-अखंडता और सांप्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से अशुभ संकेत है. इससे बड़ी विडंबना क्या होगी कि जिस बाबर को उसके मूल स्थान के कई इतिहासकार लुटेरा कहते हैं, अनेक भारतीय मुसलमान स्वयं को उससे जोड़ते हैं? हुमायूं कबीर के बाद तहरीक मुस्लिम शब्बन नामक संगठन ने ग्रेटर हैदराबाद में बाबरी मस्जिद मेमोरियल और वेलफेयर इंस्टीट्यूशन बनाने का एलान किया है. पता नहीं आगे कौन कहां बाबर के नाम पर और कुछ निर्माण की घोषणा कर दे. भारत विभाजन के पीछे बंगाल वैचारिक एवं क्रियात्मक रूप से कट्टरपंथियों के लिए बहुत बड़ी ताकत बना था.

ट्रेड डील पर समानता आधारित समझौते की अपेक्षा

भारत और अमेरिका के बीच व्यापार वार्ता के संबंध में कुछ सकारात्मक संकेत सामने आ रहे हैं, लेकिन इस बीच कुछ आशंकाएं भी जताई जा रही हैं कि क्या इस बातचीत में परस्पर समानता पर आधारित हित सुनिश्चित होने और एक संतुलित समझौते की राह साफ होगी. गौरतलब है कि प्रस्तावित व्यापार समझौते के पहले चरण को अंतिम रूप देने की कोशिश के तहत अमेरिकी दल वार्ता के लिए भारत में है.

इसी बीच अमेरिका के व्यापार प्रतिनिधि जेमीसन ग्रीयर ने कहा कि व्यापार समझौते के संदर्भ में भारत की ओर से 'अब तक के सबसे अच्छे प्रस्ताव' मिले हैं. माना जा रहा है कि इस बयान का उद्देश्य अमेरिका की ओर से भारत पर लगाए गए शुल्क से उपजे गतिरोध को दूर करने की कोशिश करना है. इसकी वजह यह है कि एकतरफा और मनमानी शुल्क नीति के जरिए दबाव बनाने की कोशिश के समांतर व्यापार समझौते के लिए वार्ता में सकारात्मक नतीजों की उम्मीद नहीं की जा सकती. फिर व्यापार वार्ता में गतिरोध की एक मुख्य वजह ही अमेरिका की नई शुल्क नीति रही है. इसलिए यह देखने की बात होगी कि इस मसले पर अमेरिका के रुख में कितना बदलाव आ पाता है.

दरअसल, व्यापार वार्ता के सकारात्मक दिशा में बढ़ने के मद्देनजर जारी कोशिशों के तहत ही भारत और अमेरिका के बीच पारस्परिक रूप से लाभकारी समझौते का सवाल अब एक मुख्य बिंदु है. इससे पहले अमेरिका का रवैया आमतौर पर यही सामने आ रहा था कि दोनों देशों के बीच व्यापार समझौता हो, लेकिन उसकी शर्तों पर. इसी क्रम में उसने शुल्क लगाने के फैसले को दबाव के एक औजार के रूप में इस्तेमाल किया. उसकी यह मंशा अधूरी रही, क्योंकि नुकसान की तमाम आशंकाओं के बावजूद भारत ने इस मसले पर अपना स्वतंत्र रुख बरकरार रखा.

इसके बावजूद, यह हकीकत है कि अमेरिका के शुल्क लगाने से उपजी परिस्थिति अंतरराष्ट्रीय व्यापार परिदृश्य पर विपरीत प्रभाव तो डाल ही रही थी. भारत के सामने भी कुछ चुनौतियां खड़ी होने की आशंका बनी रहीं. इसलिए भारत ने थोड़ा व्यावहारिक नीति पर आगे बढ़ते हुए अमेरिका के साथ व्यापार वार्ता को आगे बढ़ाने में रुचि दिखाई है, लेकिन इसके पीछे समानता आधारित समझौते की अपेक्षा भी है.

अमेरिकी शुल्कों में कटौती, भारतीय उत्पादों के अमेरिकी बाजार में आसान प्रवेश, रक्षा और तकनीक के क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारी, दवा और सेमी-कंडक्टर उद्योग आदि व्यापार वार्ता के मुख्य मुद्दों में शामिल हो सकते हैं. मुश्किल वहां आ सकती है, जिसमें अमेरिका भारत से कृषि, डेयरी और डिजिटल नीति के संदर्भ में कई महत्त्वपूर्ण रियायतों पर जोर दे रहा है. जाहिर है, भारत के लिए थोड़ा सजग रहने का वक्त है, क्योंकि अमेरिका के साथ वार्ता में खासतौर पर कृषि क्षेत्र से जुड़े कई सवाल उभरे हैं. हाल ही में अमेरिका के राष्ट्रपति ने अपने यहां के किसानों की आमदनी कम होने के लिए कुछ अन्य देशों सहित भारत के चावल की बिक्री को जिम्मेदार ठहराया.

दूसरी ओर, अगर अमेरिका अपना मक्का, गेहूं, कपास और सोयाबीन जैसे उत्पाद भारतीय बाजारों में निर्यात करता है, तो इससे भारत के छोटे किसानों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा पर विपरीत असर पड़ सकता है. इसी तरह, किसी समझौते की स्थिति में भारत को कृषि और जेनेटिकली माडिफाइड, यानी आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों पर भी छूट देने के मामले में सतर्क रहने की जरूरत है.

कर्नाटक में हेट स्पीच पर नया बिल

कर्नाटक विधानसभा में हेट स्पीच और हेट क्राइम के खिलाफ बिल पेश किया गया है. इसका मकसद है नफरत और घृणा फैलाने वाले अपराधों व बयानों को नियंत्रित करना. अक्सर कई ऐसे बयान आते रहते हैं, जिससे समाज में वैमनस्य बढ़ता है. इसे देखते हुए ऐसे कानून जरूरी लगते हैं, लेकिन इसके साथ चिंता भी है - दुरुपयोग की.

कड़ी सजा . बिल के प्रावधान बेहद कड़े हैं. पहली गलती पर एक से 7 साल की सजा और दोबारा गलती होने पर 2 से 10 साल की सजा मिल सकती है. साथ में, जुर्माना भी है. विधेयक में हेट क्राइम और हेट स्पीच को विस्तृत रूप से परिभाषित किया गया है और इसका दायरा बहुत बड़ा है, जिसमें सार्वजनिक बयानबाजी से लेकर ऑनलाइन निगरानी तक शामिल है.

सुप्रीम चिंता . इसमें शक नहीं कि नफरत फैलाने वाले बयान और कृत्य इस समय की एक बड़ी परेशानी हैं, जिनसे कानून-व्यवस्था के लिए चुनौती खड़ी हो जाती है. सामाजिक सद्भाव को भी चोट पहुंचती है. सुप्रीम कोर्ट कई मौकों पर इस बारे में चिंता जता चुका है. 2018 में शीर्ष अदालत ने हेट क्राइम की निंदा करते हुए कहा था कि नागरिकों की जान की रक्षा करना राज्य का कर्तव्य है. उसी साल तहसीन पूनावाला जजमेंट आया, जिसमें राज्यों के लिए कई दिशा-निर्देश थे.

आलोचना और नफरत . लेकिन, जब इतना कड़ा कानून आता है, तो उसके दुरुपयोग की आशंका भी बढ़ जाती है. भले ही बिल में अपराध की विस्तृत व्याख्या की गई हो, लेकिन असल चुनौती है इसे लागू करने में. कौन-सी बात नफरत फैलाने वाली है और कहां आलोचना की गई है - इसमें समझ का थोड़ा भी अंतर बड़ा टकराव पैदा कर सकता है. इसी तरह, असहमति के अधिकार को भी सुरक्षित रखने की जरूरत है.

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता . बिल में सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लैटफॉर्म को भी शामिल किया गया है. इंटरनेट पर जिस तेजी से दुष्प्रचार और वैमनस्य बढ़ाने वाले कंटेंट बढ़े हैं, उसे देखते हुए बिल उपयोगी हो सकता है, पर यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के आड़े नहीं आना चाहिए. बिल को लेकर कई आशंकाएं और राजनीतिक विरोध है. कर्नाटक BJP का आरोप है कि यह बिल खास समूह को निशाना बनाने के लिए लाया जा रहा है. ऐसे में यह जरूरी है कि इस तरह का इंतजाम और निगरानी हो कि यह बिल किसी से बदला लेने का नहीं, बल्कि शांति कायम करने का टूल बने.

पाबंदी की राह, क्या वास्तव में सोशल मीडिया के संजाल से बच्चे बच सकेंगे?

इसमें कोई दोराय नहीं कि इंटरनेट की सुविधा ने दुनिया के दायरे को बहुत छोटा बना दिया है, लेकिन इसके समांतर एक सच यह भी है कि आभासी दुनिया में सोशल मीडिया के बहुतेरे मंचों पर सीमाओं से परे लोगों के बीच संवाद का विस्तार हुआ है, तो यथार्थ के धरातल पर लोग एक-दूसरे से दूर भी होते गए हैं. यह बहुत संभव है कि आस-पड़ोस के बच्चे सोशल मीडिया के किसी मंच पर तो आपस में दोस्त हों, संवाद करते हों और साथ में कोई गेम खेलते हों, लेकिन वास्तव में वे कभी नहीं मिलते. यानी आभासी दुनिया में बच्चों का दायरा विस्तृत होता है, लेकिन यथार्थ के धरातल पर वे अकेले होते हैं. ऐसे में बिना आहट के एकाकीपन का दंश बच्चों के भीतर उतरता है, जो उन्हें आत्मघाती अवसाद के घेरे में ला दे सकता है. किसी एप के संजाल में फंसे बच्चों के मनोवैज्ञानिक परेशानियों का शिकार होने से लेकर आत्महत्या करने तक की खबरें आती रही हैं. दुनिया भर में सोशल मीडिया पर अति-सक्रियता के मानसिक और शारीरिक दुष्प्रभावों के मद्देनजर बच्चों के लिए इसके इस्तेमाल पर रोक लगाने या सीमित करने के सुझाव सामने आते रहे हैं. इस क्रम में आस्ट्रेलिया ने एक ठोस पहल करते हुए अपने यहां सोलह वर्ष से कम के बच्चों के लिए सोशल मीडिया के उपयोग पर बुधवार से पाबंदी लागू कर दी है. हालांकि संदेश भेजने और गेम खेलने वाले कुछ मंचों को इस प्रतिबंध से अलग रखा गया है. आस्ट्रेलिया में इस सख्त नियम के लागू होने के बाद बच्चों को उनका बचपन वापस मिलने की उम्मीद की जा रही है, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करेगा कि प्रतिबंध के लागू होने का स्वरूप क्या है और क्या वास्तव में सोशल मीडिया के संजाल से बच्चे बच सकेंगे.

राशिफल

■ **मेष**: यह दिन आपके कॉन्फिडेंस में बूस्ट लेकर आएगा. आपके सारे काम तेजी से पूरे होने वाले हैं. कोई पुराना काम आज आपको खुशी दे सकता है क्योंकि इसमें अच्छी खासी ग्रोथ देखने को मिलेगी. परिवार में माहौल शांत रहेगा. बस खर्चा सोच समझकर करें. साथ ही जल्दबाजी में कोई भी फैसला ना लें.

■ **वृषभ**: इस दिन आप थोड़े से इमोशनल हो सकते हैं. हालांकि आपका दिन अच्छा जाएगा. काम में धीरे-धीरे सुधार देखने को मिलेगा. आज आपकी बात किसी खास शख्स के साथ हो सकती है. आज के दिन आपको पैसों के मामले में थोड़ी सावधानी रखनी है. देर रात खाना खाने से बचें.

■ **मिथुन**: यह दिन आपके लिए काफी लकी साबित होने वाला है. कोई रुका हुआ काम आगे बढ़ने के संकेत हैं. आपको आज इससे जुड़ी कोई ना कोई खुशखबरी जरूर मिलेगी. दोस्तों के साथ आप अच्छा समय बिता पाएंगे. साथ ही परिवार के साथ भी खुशियों में शामिल होंगे.

■ **कर्क**: इस दिन आप एकदम शांत मन से फैसले लेने वाले हैं. ऐसे में आपके सारे काम बड़ी ही आसानी से पूरे हो जाएंगे. रिश्ते के मामले में भी सब कुछ अच्छा होगा. कल आपको ऑफिस में काम का दबाव नहीं होगा. शाम में आप अपनों के साथ सुकून भरा समय बिताएंगे.

■ **सिंह**: आपकी पर्सनैलिटी और ग्रो होगी. लोग आपसे काफी प्रभावित होंगे. बिजनेस से जुड़े लोगों को आज फायदा मिल सकता है. परिवार में कोई गुड न्यूज मिल सकती है, जिससे पूरा दिन सही जाने वाला है. आज आपके खर्चे थोड़े बढ़ सकते हैं. सेहत का ध्यान रखें और नींद पूरी लें.

■ **कन्या**: आपको अपनी मेहनत का फल मिलने वाला है. प्रोफेशनल लाइफ में आपके सुझाव सही और अहम साबित होंगे. घर में शांति रहेगी. खुशियों का आगमन होगा. आपकी आर्थिक स्थिति भी अब पहले से सुधरने वाली है.

■ **तुला**: आपकी जिम्मेदारियां थोड़ी बढ़ सकती हैं. हालांकि आप सारी चीजों को संभाल लेंगे. आज काम के मामले में थोड़ा सतर्क रहें. कोई भी गलती ना करें. रिश्ते में समझ और धैर्य की जरूरत है. आपकी हेल्थ ठीक रहेगी लेकिन आपको ओवरथिंकिंग से बचना है.

■ **वृश्चिक**: आप क्रिएटिविटी से काम करेंगे. ऐसे में आप लोगों को इम्प्रेस भी करेंगे. नई सोच और आइडिया से आप लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ पाएंगे. आपको हर काम में सफलता मिलने वाली है. बस धैर्य बनाए रखने की जरूरत है. कल कोई दोस्त आपकी मदद कर सकता है. लव लाइफ में सुधार आएगा.

■ **धनु**: यह दिन आपके लिए अच्छा जाने वाला है. आपके सारे मनचाहे काम पूरे होने की उम्मीद है. साथ ही कोई पुराना विवाद अब खत्म हो सकता है. इसके अलावा आपकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार आने वाला है. लव लाइफ भी अच्छी जाएगी. बस अपने रूटीन को सही तरीके से फॉलो करते रहें और अपना ध्यान रखें.

■ **मकर**: काम में सफलता मिलेगी. दूसरों की बातों पर ध्यान ना दें. आने वाला समय सिर्फ आपका है. कल कोई नया मौका मिल सकता है. साथ ही पैसों की स्थिति भी पहले से बेहतर होने वाली है. इसके अलावा कोई बड़ा इन्वेस्टमेंट करने से बचें. खानपान का ध्यान रखें. जंक फूड से दूर रहने की कोशिश करें.

■ **कुंभ**: आपको अपने गुस्से पर थोड़ा कंट्रोल रखना है. किसी से बात करते वक्त अपने शब्दों पर ध्यान रखें. ऑफिस मीटिंग में लोगों का सुझाव ध्यान से सुनें. पैसों के मामले में थोड़ी सावधानी बरतने की जरूरत है. सेहत से जुड़ी चीजों को नजरअंदाज ना करें. खानपान सही करें.

■ **मीन**: दिमाग शांत रहेगा तो आप सारी चीजें सही से कर पाएंगे. इसी के साथ आप फैसले भी सही लेंगे. अगर क्रश से दिल की बात कहनी है तो शुभ समय है. प्रोफेशनल लाइफ में ग्रोथ दिखेगी. छोटे-छोटे लाभ होने तय हैं. परिवार में खुशियों का माहौल रहेगा. सेहत का थोड़ा ध्यान रखें. जरूरत लगे तो काम के बीच ब्रेक जरूर लें.

आत्मनिर्भर बनने का सही रास्ता

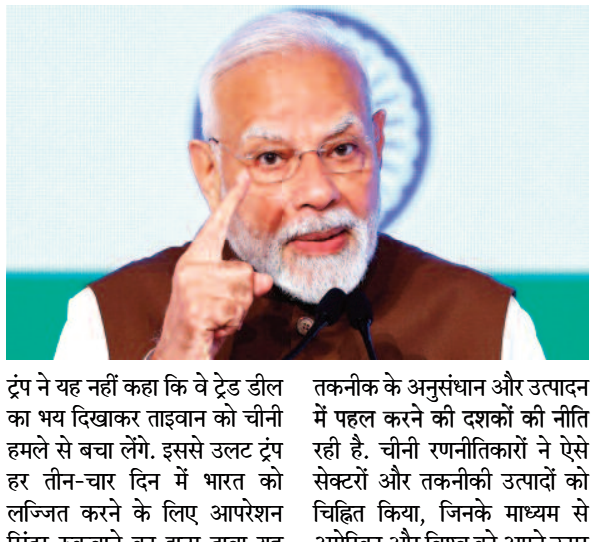

बीते दिनों जब दक्षिण कोरिया के बुसान में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग से भेंट की थी तो उन्होंने इस भेंट को जी-2 का नाम दिया था. यानी उन्होंने एक तरह से मान लिया कि अमेरिका के बाद चीन दूसरी विश्व महाशक्ति बन चुका है, जिसे रोकना अब उसके वश की बात नहीं है और सोवियत संघ के विघटन के बाद एकध्रुवीय विश्व अब फिर से द्विध्रुवीय है. अपने पहले कार्यकाल में ट्रंप चीन को सबक सिखाने की बातें किया करते थे, पर अब उनके सुर पूरी तरह बदल चुके हैं.

वैसे ट्रंप इस वार्ता से पहले ही चीनी उत्पादों पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाने की योजना को एक साल के लिए स्थगित कर चुके थे. फिलहाल चीनी उत्पादों पर अमेरिका 47 प्रतिशत का ही टैरिफ लगा रहा है. भारत जिसके साथ सामरिक साझेदारी को अमेरिकी नेता पिछले दो दशक से 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय साझेदारी बताते नहीं थकते, उसके उत्पादों पर 50 प्रतिशत का टैरिफ है, जबकि अमेरिका अपने सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी देश चीन पर उससे कम टैरिफ लगा रहा है.

ट्रंप से जब ताइवान पर चीनी हमले के खतरे के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि वह जब होगा, तब देखेंगे. ट्रंप ने यह नहीं कहा कि वे ट्रेड डील का भय दिखाकर ताइवान को चीनी हमले से बचा लेंगे. इससे उलट ट्रंप हर तीन-चार दिन में भारत को लज्जित करने के लिए आपरेशन सिंदूर रुकवाने का झूठा दावा यह कहकर करते हैं कि उन्होंने व्यापारिक समझौता न करने का भय दिखाकर संभावित परमाणु युद्ध रुकवा दिया. रूस से कच्चा तेल भारत और चीन, दोनों ही आयात कर रहे हैं, पर ट्रंप प्रशासन हाथ धोकर भारत के ही पीछे पड़ा है. इस सबसे समझा जा सकता है कि चीन के सामने नतमस्तक अमेरिकी शासन तंत्र ने अब यह ठाना है कि अगर चीन विश्व की दूसरी महाशक्ति बन ही गया है और उसे रोकना उसके वश की बात नहीं रही है तो कम से कम भारत और रूस का उभार तो रोका ही जाए.

चीन की इस मजबूत स्थिति के पीछे उसकी सामरिक रूप से महत्वपूर्ण तकनीक के अनुसंधान और उत्पादन में पहल करने की दशकों की नीति रही है. चीनी रणनीतिकारों ने ऐसे सेक्टरों और तकनीकी उत्पादों को चिह्नित किया, जिनके माध्यम से अमेरिका और विश्व को अपने ऊपर निर्भर बनाया जा सके. परिणाम-स्वरूप चीन आज ऐसे कई उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखलाओं को नियंत्रित करता है और उनके माध्यम से उसने ट्रंप के टैरिफ युद्ध का मुंहतोड़ जवाब दिया है. ट्रंप ने चीन के उत्पादों पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाने की धमकी दी तो उसने अमेरिका को रेयर अर्थ मैगनेट्स की आपूर्ति रोक दी, जिससे अमेरिका का उद्योग जगत परेशान हो उठा और ट्रंप को टैरिफ लगाने की अपनी योजना को स्थगित करना पड़ा. दुर्लभ भूगर्भीय खनिज आज अंतरिक्ष यानों, रक्षा उपकरणों, इलेक्ट्रिक कारों से लेकर हेडफोन बनाने के लिए आवश्यक हैं और ये

नाचन बनाना चाहता था बोरीवली को 'स्वतंत्र राष्ट्र'!

ठाणे जिले के शांत बोरीवली गांव में परसों आधी रात वह धमाका हुआ, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी. घोर अंधेरे में दौड़ती काली गाड़ियां, बुलेटप्रूफ कमांडो, चारों दिशाओं से बढ़ती टीमें और पलक झपकते ही पूरा गांव घेराबंदी की जद में आ गया. यह कार्रवाई साकीब नाचन के कारण हुई. आतंक पैâलाने के आरोप में गिरफ्तार नाचन की गत जून में मौत हो गई थी. पता चला है कि नाचन बोरीवली गांव को 'स्वतंत्र राष्ट्र' घोषित करने की गुप्त योजना बना रहा था. इस खुलासे ने सुरक्षा एजेंसियों को चौंका दिया था. खुफिया एजेंसियों के सूत्रों के अनुसार, जांच में सामने आया कि साकीब खुद को किसी गुप्त शासन का मुखिया मानकर 'अल-शाम स्टेट' नाम के राष्ट्र की संरचना तैयार कर रहा था. वह अंदर ही अंदर युवाओं को कट्टर विचार, कोड भाषा और भूमिगत कामकाज की ट्रेनिंग दी जा रही थी. उसने फंडिंग के लिए डिजिटल, नकली और एन्क्रिप्टेड लेन-देन का जाल पैâला रखा था, जिसकी भनक ईडी को लगी. दूसरी ओर एटीएस पहले ही साकीब की गतिविधियों पर नजर रखे बैठी थी.

महाराष्ट्र के गांवों पर कब्जा कर रहा गुजरात!

महाराष्ट्र और गुजरात सीमा पर तनाव फिर भड़क उठा है. स्थानीय लोगों का आरोप है कि महाराष्ट्र की जमीन पर गुजरात की घुसपैठ और दखल-अंदाजी बढ़ रही है. गुजरात, तलासरी तालुका के वेवजी, गिरगाव, घीमाणीया, झाई, संभा और अच्छाड जैसे गांवों में सड़कें और पक्की इमारतें खड़ी कर रहा है. कहा गया है कि गूगल मैप पर गलत सीमा दिखना विवाद के लिए नया हथियार मिल गया है. इससे प्रशासनिक रिकॉर्ड, राजस्व कागजात और नागरिक अधिकारों से जुड़े कार्यों में भारी भ्रम पैदा हुआ है. इसी बीच दोनों राज्यों द्वारा शुरू की गई संयुक्त पैमाइश ग्रामीणों के घेराव के चलते रुक गई, जिससे वर्षों से लंबित यह विवाद फिर अनिश्चितता में फंस गया और शासन-व्यवस्था व सीमा सुरक्षा की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्न खड़े हो गए हैं. महाराष्ट्र और गुजरात दोनों राज्यों की सीमा रेखा पर पुराना विवाद एक बार फिर चर्चा में है. तलासरी तालुका के छह ग्राम पंचायतों की सीमा के मुद्दों के कारण तनाव पैदा हुआ है.

अदालतों पर भाजपा का नियंत्रण महाभियोग जरूरी है!

भारतीय जनता पार्टी के शासनकाल में देश की न्यायपालिका से पर लोगों का विश्वास उठ गया है. इसका कारण न्यायाधीशों की नियुक्ति में राजनीतिक हस्तक्षेप हो रहा है. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के प्रवक्ता और पदाधिकारी राज्यों के उच्च न्यायालयों में नियुक्त किए जा रहे हैं. दूसरा, सरकार की ओर से उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों पर दबाव है. इसके चलते खरा न्याय मिलना मुश्किल हो गया है. न्यायपालिका में २५ प्रतिशत न्यायाधीशों पर महाभियोग लगाकर इन लोगों को पद से हटाया जाए, ये इस लायक हैं. विपक्ष तमिलनाडु-मद्रास उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति जी. आर. स्वामीनाथन के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव ला रहा है. सौ से अधिक सांसदों ने इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए हैं. पाखंडी हिंदुत्ववादी अमित शाह और देवेंद्र फडणवीस ने इस महाभियोग प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करनेवाले शिवसेना सांसदों के खिलाफ स्यापा शुरू कर दिया है. न्यायमूर्ति स्वामीनाथन हिंदुत्ववादी हैं इसलिए भाजपा का कहना है कि उन पर महाभियोग चलाना गलत है. अदालत में जाति, धर्म और संप्रदाय को घसीटने का क्या कारण है? यहां धर्म या सेक्युलर का कोई सवाल ही नहीं है. न्याय देवता का तराजू निष्पक्ष होता है, लेकिन भारतीय न्यायपालिका का तराजू फिलहाल भाजपा या संघ के हाथों में है और न्यायाधीश उनके इशारों पर काम कर रहे हैं. रोमनों की तरह, भारतीय न्याय देवता के भी कुछ प्रतीक थे. एक ऐसा सिंहासन जो आंधी में भी नहीं हिलता, एक ऐसा हृदय जो किसी भी भावना के आगे नहीं झुकता, बंधी आंखें जो किसी को भी पूर्वाग्रह या बुरी बुद्धि से नहीं देखतीं और सभी अपराधियों पर समान निश्चितता और निष्पक्ष शक्ति से गिरती तलवार. हालांकि, मोदी युग में न्यायदेवता के ये सभी प्रतीक नष्ट कर दिए गए हैं. अब न्यायपालिका को अपने हाथ में लेकर भारत में सांप्रदायिक और धार्मिक तनाव पैदा करना और उससे राजनीतिक लाभ उठाना संघ परिवार का यह 'राष्ट्रीय कार्य' जारी है.

राष्ट्रबाण
सिवनी, शनिवार 13 दिसंबर 2025

जबलपुर राष्ट्रबाण

• सोहगपुर • ब्योहारी • जयसिंहपुर • जैतपुर

मोनू हत्याकांड- बेटे को बचाने पिता ने दे दी जान

जबलपुर में पुलिस को गुमराह करने बदमाशों ने रची साजिश, बचने के लिए साथी को भी कर दिया घायल

जबलपुर | संवाददाता
rashtrabaan.in

जबलपुर पुलिस ने मोनू चक्रवर्ती हत्याकांड का खुलासा कर दिया। पुलिस ने 2 नाबालिग सहित 5 हत्यारों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों ने मोनू के सीने में 4 बार चाकू से हमला किया था। इसके बाद वे फरार हो गए। भागते वक्त उन्होंने अपने एक साथी को भी चाकू मार दिया था और उसे काउंटर केस दर्ज कराने का कहा था। गढ़ा पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर शुक्रवार को उस स्थान पर ले जाकर जुलूस निकाला, जहां उन्होंने वारदात को अंजाम दिया था। हत्याकांड का मुख्य आरोपी अमन चक्रवर्ती आदतन बदमाश है। उसके खिलाफ कई आपराधिक मामले गढ़ा और अन्य थानों में दर्ज हैं।

बेटे को बचाने पिता ने दी जान

गोरखपुर निवासी मोनू चक्रवर्ती शक्ति नगर कॉलोनी में चाइनीज खाद्य सामग्री के ठेले लगाते हैं। मदद के लिए कभी-कभी उनका बेटा भी आ जाया करता था। 7 दिसंबर की रात करीब साढ़े 11 बजे मोनू चक्रवर्ती शॉप पर थे और बेटा नितिन उनके साथ काम कर रहा था। तभी अमन अपने साथी रोहित झरिया और अन्य तीन लड़कों के साथ पहुंचा, और पुराने विवाद पर गाली गलौज करना शुरू कर दिया। बेटे नितिन ने जब आरोपियों को समझाने की कोशिश की तो, उससे लड़ाई करने लगे। इस बीच मोनू चक्रवर्ती बेटे को बचाने के लिए जैसे ही लाठी लेकर आरोपियों के पास पहुंचा तो पांचों ने घेर लिया। इसके बाद अमन चक्रवर्ती ने ताबड़तोड़ चाकू मारकर बेटे के सामने ही पिता की हत्या कर दी।

अमन ने अपने साथी को भी मारा चाकू

टीआई ने बताया कि अमन चक्रवर्ती जब मोनू की हत्या कर फरार हो रहे थे, तभी थोड़ी ही दूरी पर उसका साथी रोहित भी गंभीर रूप से घायल हालत में मेडिकल कॉलेज इलाज के लिए पहुंचा था।

आरोपियों का पुलिस ने निकाला जुलूस

मोनू हत्याकांड में गढ़ा पुलिस ने एक नाबालिग सहित पांच आरोपियों को गोरखपुर से गिरफ्तार करने के बाद उनका क्षेत्र में जुलूस निकाला। टीआई ने बताया कि अमन बहुत ही शातिर है, और उसने ही मोनू की हत्या करने के बाद पुलिस से बचने और कोर्ट में लाभ लेने के लिए प्लान बनाया था। पुलिस ने मुख्य आरोपी सहित रोहित झारिया,आकाश रजक को गिरफ्तार कर लिया है। अमन ने रोहित को गोरखपुर में चाकू मारकर घायल किया था, लिहाजा उसके खिलाफ गोरखपुर थाना पुलिस ने भी हत्या के प्रयास का मामला दर्ज किया है। चार दिन पहले सोमवार की रात इंद्रा नगर निवासी मोनू चक्रवर्ती शक्ति नगर चौपाटी पर चाइनीज फूड का ठेला लगाया हुआ था। दुकान बंद करते समय अमन चक्रवर्ती अपने साथियों- रोहित झारिया, ताशू यादव और नंदू तिवारी के साथ वहां पहुंचा। चारों ने मोनू से विवाद करते हुए गाली-गलौज की और चाकू निकालकर हमला शुरू कर दिया। कर्मचारी के मुताबिक आरोपी तब तक वार करते रहे, जब तक कि मोनू की मौत नहीं हो गई। वारदात को अंजाम देकर चारों बदमाश बाइक से फरार हो गए।

पुलिस ने जब उससे पूछताछ की तो उसने मोनू के बेटे नितिन और उसके एक साथी का नाम लेते हुए कहा कि उन्होंने चाकू मारकर घायल कर दिया है। शुरूआती जांच में पुलिस को पता चला कि उसने गुमराह करने के लिए कहा कि मोनू के बेटे नितिन का नाम लिया था, जबकि असल में अमन ने ही चाकू मारने के बाद कहा था कि काउंटर केस दर्ज करवाने के लिए मोनू के दोनों बेटों का नाम पुलिस के सामने लेना, जिससे कि मामला जब कोर्ट में जाए तो समझौता हो सके।

दो बेकसूर जेल जाने

सोमवार की रात को मोनू चक्रवर्ती की हत्या करने के बाद अमन आकाश रजक, रोहित झारिया सहित दो नाबालिगों के साथ गोरखपुर तरफ भागा। जबकि मृतक के दोनों बेटे इलाज के लिए सूपाताल स्थित एक निजी अस्पताल पहुंचे, जहां करीब आधे घंटे तक डाक्टरों ने इलाज किया, पर हालत गंभीर होने के कारण मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। इधर, अमन ने गोरखपुर में रोहित के कमर पर चाकू मारकर घायल कर दिया। करीब रात 2 बजे खून से लुहूलुहान हालत में रोहित मेडिकल कॉलेज पहुंचा। जानकारी लगते ही टीआई टीम के साथ मौके पर पहुंचे। जहां रोहित ने मोनू चक्रवर्ती के बेटे वीरू और नितिन का नाम लिया। घायल रोहित के बयान को लेकर जब जांच की तो पता चला कि घटना के बाद से ही दोनों बेटे मोनू के साथ थे। जबकि देर रात को खून से सना रोहित मेडिकल कॉलेज आया। इस दौरान टीआई को शक हुआ कि घटना के समय ही अगर रोहित घायल हो गया था, तो वह दो घंटे तक आखिर कहां रहा, जबकि घटनास्थल से मेडिकल कॉलेज चंद दूरी पर ही है। इसके साथ ही वीरू और नितिन की मोबाइल लोकेशन घटनास्थल के समय वहां पर नहीं थी। पुलिस को गुमराह करने के लिए अमन ने ये पूरा प्लान बनाया था, पर एक छोटे से एंगल पर पुलिस ने जांच की तो सच्चाई खुलकर सामने आ गई। जिसके चलते दो बेकसूर जेल जाने से बच गए।

5 दिन पुराना विवाद बना वजह

घटना से पांच दिन पहले आरोपी अमन चक्रवर्ती का मोनू से झगड़ा हुआ था। उसी दौरान अमन ने दुकान में तोड़फोड़ भी की थी। जब मोनू ने उससे हर्जाना मांगा, तो अमन ने धमकी दी और वहां से भाग गया था। पुलिस जांच में सामने आया है कि इसी पुराने विवाद को लेकर अमन अपने तीन साथियों के साथ देर रात हत्या करने पहुंचा। अमन हाल ही में जेल से छूटकर आया था।

नेशनल लोक अदालत में 20 खण्डपीठों द्वारा होगा प्रकरणों का निराकरण

आज आयोजित होगी नेशनल लोक अदालत, विभिन्न प्रकरणों में मिलेगी छूट

शहडोल | संवाददाता
rashtrabaan.in

प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष के.एन. सिंह आज सुबह 10 बजे जिला न्यायालय स्थित एडीआर सेंटर में आयोजित होने वाली नेशनल लोक अदालत का शुभारंभ करेंगे। सिविल न्यायालय ब्यौहारी, बुढ़ार और जयसिंहनगर में भी इसका आयोजन होगा। लोक अदालत में राजीनामा योग्य आपराधिक प्रकरण, सिविल, चेक बाउन्स, पारिवारिक एवं वैवाहिक प्रकरण, मोटर दुर्घटना दावा, बैंक और वित्तीय संस्थानों के प्रीलिटिगेशन मामलों का निराकरण किया जाएगा। लोक अदालत के लिए प्रधान जिला न्यायाधीश द्वारा 20 न्यायिक खण्डपीठों का गठन किया गया है। इसमें जिला न्यायालय शहडोल में 09, सिविल न्यायालय ब्यौहारी में 04, बुढ़ार में 04 और जयसिंहनगर में 03 खण्डपीठें शामिल हैं। जिला विधिक सहायता अधिकारी देवेन्द्र सिंह परस्ते ने बताया कि लोक अदालत में मामलों के निराकरण पर संपूर्ण कोर्ट फीस वापस की जाती है तथा विवाद स्थायी रूप से समाप्त हो जाते हैं। नगरपालिका के प्रीलिटिगेशन मामलों में नियमानुसार छूट दी गई है। विद्युत प्रकरणों में प्रीलिटिगेशन स्तर पर कंपनी द्वारा आंकलित सिविल दायित्व राशि पर 30 प्रतिशत तथा चूक की स्थिति में 16 प्रतिशत वार्षिक ब्याज पर 100 प्रतिशत छूट दी जाएगी। लिटिगेशन स्तर पर दायित्व राशि पर 20 प्रतिशत तथा ब्याज पर 100 प्रतिशत छूट मिलेगी। यह छूट केवल 10 लाख रुपये तक के मामलों पर लागू होगी। छूट का लाभ पाने के लिए देय राशि का एकमुश्त भुगतान अनिवार्य है तथा आवेदक को अपने नाम के किसी भी परिसर के बकाया विद्युत देयकों का पूरा भुगतान करना होगा। पहली बार विद्युत चोरी या अनाधिकृत उपयोग के मामलों में ही छूट लागू होगी, पूर्व में लाभ ले चुके उपभोक्ता पात्र नहीं होंगे। सामान्य विद्युत बिलों पर कोई छूट नहीं दी जाएगी। यह छूट केवल 13 दिसम्बर 2025 को होने वाली लोक अदालत में समझौते की स्थिति में ही मान्य होगी तथा अपराध शमन शुल्क अधिनियम अनुसार शुल्क वसूला जाएगा। प्रकरणों से संबंधित विधिक जानकारी के लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जिला न्यायालय शहडोल के कार्यालय में संपर्क किया जा सकता है।

स्वास्थ्य विभाग ने ठाकुर मेडिकल एवं पॉलीक्लिनिक सील किया

जबलपुर। स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन की संयुक्त टीम ने चुंगी नाका क्षेत्र स्थित ठाकुर मेडिकल एवं पॉलीक्लिनिक को सील कर दिया। यह कार्रवाई क्लिनिक के खिलाफ मिली शिकायतों के बाद की गई, जिसमें कई गंभीर अनियमितताएं सामने आईं। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी (सीएमएचओ) संजय मिश्रा के अनुसार, जांच में पाया गया कि क्लिनिक संचालक के पास डॉक्टरी का वैध लाइसेंस नहीं था। इसके बावजूद वह मरीजों का इलाज कर रहा था, जिसमें ड्रेसिंग, इंजेक्शन लगाना और ड्रिप चढ़ाना जैसे कार्य शामिल थे। यह नियमों का सीधा उल्लंघन है। क्लिनिक परिसर में दो से तीन डॉक्टरों की तस्वीरें भी लगी हुई थीं। हालांकि, जांच में पता चला कि इन डॉक्टरों का क्लिनिक से कोई संबंध नहीं था। अधिकारियों ने इसे लोगों को भ्रमित करने का प्रयास बताया।

ओशो के जन्मदिन पर देश-विदेश से जबलपुर पहुंचे अनुयाई

जबलपुर | संवाददाता
rashtrabaan.in

मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर ओशो की ज्ञान स्थली के नाम से पूरी दुनिया में मशहूर है। हर वर्ष 11 से 15 दिसंबर तक उनके जन्मदिन में सैकडों अनुयाई जबलपुर पहुंचते हैं, और उस स्थान पर जाते हैं जहां रजनीश ओशो ने मौलश्री वृक्ष के नीचे बैठकर साधना की थी। कथावाचक मुरारी बापू भी ओशो के जन्म दिन में शामिल होने पहुंचे। वो कुछ दिनों से जबलपुर में रुके हुए हैं, और रामकथा कर रहे है। सैकड़ों ओशो भक्तों के साथ बापू भंवरताल पार्क स्थित मौलश्री वृक्ष पहुंचे जहां उन्होंने ओशो ध्यान स्थल का नामकरण किया, इस दौरान जबलपुर महापौर भी उनके साथ मौजूद रहे। मौलश्री वृक्ष में ऐसे अनुयाई भी नजर आए जो की ओशो के ध्यान में लिप्त होकर, आंखें बंद कर मौलश्री वृक्ष से लिपटे रहे। न सिर्फ भारत बल्कि विदेश से भी भक्त पहुंचे। उन्होंने बताया ओशो के बताए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। जबलपुर में बीते चार दिनों से अलग-अलग स्थान पर ओशो का जन्मोत्सव मनाया जा रहा है। कथावाचक मुरारी बापू ने कहा कि भंवरताल में ओशो ध्यान स्थली और नवनिर्मित ओशो पद का लोकार्पण किया गया है। उन्होंने कहा कि ओशो ध्यान स्थल के साथ मौलश्री वृक्ष भी धर्म और अध्यात्म के प्रतीक है। यहां आकर एक अलग ही सुख की प्राप्ति हुई है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में राम कथा करता हूं, लेकिन इसके साथ ही ओशो के जीवन पर भी मैं कई बार कथा में चर्चा कर चुका हूं। मुरारी बापू ने बताया कि ओशो ट्री के नीचे ही उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था, इसे इतना संभाल कर रखा है। कथा वाचक ने कहा कि किसी महापुरुष को जब किसी वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति होती है, तो वह वृक्ष भी प्रकाशित होता है।

बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत छात्राओं में बढ़ाई जागरूकता

शहडोल | संवाददाता
rashtrabaan.in

जिले में बाल विवाह के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाने हेतु महिला एवं बाल विकास विभाग के मैदानी कर्मचारियों द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। भारत सरकार के निर्देशानुसार बाल विवाह मुक्त भारत के 100 दिवसीय अभियान के तहत शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सोहागपुर में जागरूकता कार्यक्रम हुआ। कार्यक्रम में सहायक संचालक महिला व बाल विकास श्रीमती संजीता भगत ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि समाज में अब भी कई स्थानों पर बाल विवाह होते हैं, जिनके दुष्परिणाम स्वरूप कम उम्र में गर्भधारण की स्थिति बनती है, जिससे बच्चे न शारीरिक और न मानसिक रूप से परिपक्व हो पाते। उन्होंने बताया कि बाल विवाह होने पर प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना का लाभ भी नहीं मिलता। साथ ही स्पष्ट किया कि बाल विवाह दण्डनीय अपराध है तथा युवक की न्यूनतम आयु 21 वर्ष और बालिका की 18 वर्ष अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि बाल विवाह की सूचना चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 तथा महिला हेल्पलाइन 181 पर दें।

नेत्रहीन दूल्हा-दुल्हन ने जबलपुर में की शादी, राष्ट्रीय दृष्टिहीन संघ ने किया आयोजन

जबलपुर | संवाददाता
rashtrabaan.in

जबलपुर की सदर कॉलोनी में गुरुवार को एक अनूठा विवाह समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में भिंड के नीरज बंसल और रीवा की शिवानी बंसल ने शादी रचाई। दोनों नेत्रहीन हैं, और उनकी प्रेम कहानी कॉलेज से शुरू हुई थी। विवाह समारोह स्थल पर रोशनी, सजावट और बैंड-बाजा सामान्य था, लेकिन माहौल खास था। बारात में शामिल अधिकांश लोग नेत्रहीन थे, जो इस शादी को और भी विशिष्ट बना रहा था। दूल्हा नीरज बंसल भिंड से हैं, जबकि दुल्हन शिवानी बंसल रीवा की रहने वाली हैं। दोनों ने एक-दूसरे का हाथ थामकर जीवन की नई यात्रा शुरू की। नीरज ने अपनी प्रेम कहानी साझा करते हुए बताया, ÷हम दोनों कॉलेज में साथ पढ़ते थे। धीरे-धीरे हमारी दोस्ती हुई, जो बाद में प्यार में बदल गई। हमने हमेशा एक-दूसरे के साथ जीवन बिताने की कल्पना की थी, और आज वह सपना पूरा हो गया। शिवानी ने भी अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा- हमने जो चाहा था, वह आज पूरा हुआ। उनकी आंखों में खुशी साफ झलक रही थी।

नाबालिग से दुष्कर्म व अश्लील वीडियो बनाने वाले आरोपी को जयसिंहनगर थाना पुलिस ने किया गिरफ्तार

शहडोल | संवाददाता
rashtrabaan.in

पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर जयसिंहनगर थाना पुलिस नने नाबालिग पीड़िता की शिकायत पर तत्काल कार्रवाई करते हुए दुष्कर्म, ब्लैकमेलिंग और अश्लील वीडियो-फोटो बनाकर वायरल करने की धमकी देने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। पीड़िता ने अपने परिजनों के साथ महिला थाना पहुँची और एक लिखित शिकायत दर्ज कराई। शिकायत में बताया गया कि आरोपी अनुराग गुप्ता पिता संतोष गुप्ता उम्र 19 वर्ष निवासी कनाडीखुर्द स्कूल के समय से पीड़िता को जानता था। इसी पहचान का लाभ उठाकर आरोपी ने उसे बहला-फुसलाकर कई बार जबरन दुष्कर्म किया और उसके अश्लील वीडियो व फोटो बनाकर उन्हें वायरल करने की धमकी देकर लगातार ब्लैकमेल करता रहा।शिकायत में उल्लेख किया कि बीते दिनों आरोपी पीड़िता के घर पहुँचा और उसके बुलावे पर न आने पर मारपीट की तथा अश्लील फोटो वायरल करने की धमकी दी। पीड़िता ने आरोपी के डर के कारण उसके बुलावे पर पहुँची पीड़िता के साथ फिर से जबरन बलात्कार किया। पीड़िता ने अगले दिन अपने परिजनों को पूरी घटना बताई और थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई। पुलिस ने ने गंभीर आरोपों को देखते हुए आरोपी के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता और पॉक्सो अधिनियम की संबंधित धाराओं में अपराध दर्ज किया। पुलिस ने तत्परता से आरोपी को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय में पेश कर दिया। कार्रवाई में निरीक्षक अजय बैगा के नेतृत्व में उनि. जीवन सिंह टेकाम, सउनि. अनिल गौतम, आरक्षक उदयभान सिंह, आरक्षक रोहित यादव और सुजीत सिंह ने सराहनीय भूमिका निभाई।

खुले में मांस विक्रय करने वालों पर की गई कार्रवाई

शहडोल | संवाददाता
rashtrabaan.in

प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार प्रदेश में खुले में मांस का विक्रय प्रतिबंधित किया गया है। कलेक्टर डॉ. केदार सिंह के निर्देशानुसार नगरपालिका शहडोल के अमले ने शहडोल नगर बस स्टैंड के पास खुले में मांस बेचने वाले 7 दुकानदारों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए 1800 रुपये का अर्थदण्ड अधिरोपित किया। साथ ही दुकानदारों को समझाइश दी गई कि खुले में मांस का विक्रय न करें तथा निर्धारित स्थानों पर ही दुकानें संचालित करें, अन्यथा सख्त कार्रवाई की जाएगी। इस कार्रवाई में स्वच्छता निरीक्षक अनिल महोबिया, आईसी इंचार्ज गौरव, भूपेश कोहरे, आनंद यादव सहित अन्य कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

शासकीय कन्या महाविद्यालय में जागरूकता कार्यक्रम, बुजुर्गों व आमजन ने साइबर सुरक्षा की शपथ ली

पुलिस का साइबर सुरक्षा अभियान हुआ तेज, नागरिकों को किया जागरूक

शहडोल | संवाददाता
rashtrabaan.in

पुलिस द्वारा जिलेभर में साइबर व डिजिटल सुरक्षा को लेकर व्यापक जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। पुलिस अधीक्षक श्री रामजी श्रीवास्तव के दिशा-निर्देशन में शुरू इस अभियान का उद्देश्य नागरिकों को ऑनलाइन ठगी और साइबर अपराधों से बचाव के प्रति सचेत करना है। अभियान के अंतर्गत सभी थाना क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम, संवाद सत्र तथा सार्वजनिक सूचना प्रसार गतिविधियाँ लगातार आयोजित की जा रही हैं। इसी कड़ी में गुरुवार को साइबर सेल टीम ने गवर्नमेंट कॉलेज, पांडव नगर शहडोल में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बड़ी संख्या में बुजुर्ग नागरिक एवं आमजन शामिल हुए। कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने इंटरनेट उपयोग के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों, नए-नए साइबर अपराध तरीकों और डिजिटल सुरक्षा से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियों से उपस्थित लोगों को अवगत कराया। प्रतिभागियों को फर्जी लिंक, संदिग्ध ईमेल, अज्ञात ऐप्स और धोखाधड़ी वाले संदेशों की पहचान करने तथा उनसे बचने के व्यावहारिक उपाय बताए गए। इस दौरान उपस्थित नागरिकों ने यह शपथ भी ली कि वे संदिग्ध लिंक पर क्लिक नहीं करेंगे, अज्ञात स्त्रोतों से मोबाइल एप्लिकेशन डाउनलोड नहीं करेंगे, अपने बैंक विवरण, पासवर्ड या ह्ल्ल्क किसी के साथ साझा नहीं करेंगे और किसी भी प्रकार की साइबर धोखाधड़ी होने पर तुरंत शिकायत दर्ज कराएंगे। पुलिस प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि वे स्वयं सतर्क रहें और अपने परिवार को भी साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाएं, जिससे डिजिटल युग में सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित किया जा सके।

साइबर अपराध की शिकायत ऐसे करें

राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930,राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल, निकटतम थाना या साइबर सेल

राष्ट्रबाण
सिवनी, शनिवार 13 दिसंबर 2025

बैतूल राष्ट्रबाण

● मुलताई ● बैतूल बाजार ● आमला ● भैंसादंड ● सारणी ● बोरदई ● आठनेर

दिल्ली महारैली, एसआईआर और स्थापना दिवस की तैयारियों पर झोंकी पूरी ताकत

जिला कांग्रेस की अहम बैठक में दिल्ली रैली से लेकर स्थापना दिवस तक की रणनीति तय

बैतूल | संवाददाता
rashtrabaan.in

दिल्ली में 14 दिसम्बर को रामलीला मैदान में आयोजित होने वाली वोट चोर गद्दी छोड़ महारैली और आगामी राजनीतिक कार्यक्रमों की व्यापक तैयारी को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा शुक्रवार 12 दिसम्बर को कांग्रेस कार्यालय बैतूल गंज में संयुक्त बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष निलय विनोद डागा ने की। यह बैठक दोपहर 1 बजे से आयोजित हुई, जिसमें जिले के सभी पूर्व विधायक, विधानसभा और लोकसभा प्रत्याशी, ब्लाक अध्यक्ष, उपब्लाक अध्यक्ष, मंडलम अध्यक्ष, विधानसभा प्रभारी, ब्लाक प्रभारी, उपब्लाक प्रभारी, मंडलम प्रभारी, मोर्चा संगठन के जिलाध्यक्ष, मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रभारी, जिलाध्यक्ष आईटी सेल, विधानसभा आईटी सेल प्रभारी, युवक कांग्रेस प्रदेश महासचिव, सचिव, युवक कांग्रेस जिलाध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, जिला महासचिव, युवक कांग्रेस विधानसभा अध्यक्ष, युवक कांग्रेस ब्लाक अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष सहित सभी जिम्मेदार पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में यह रहे उपस्थित

बैठक में कांग्रेस जिलाध्यक्ष निलय डागा के साथ बैतूल विधानसभा प्रभारी गोपालकृष्ण शर्मा, सुभाष देशमुख, पूर्व विधायक धरमूसिंह सिरसाम, ब्रम्हा भलावी, डॉक्टर पी.आर. बोडखे, भैसदेही विधानसभा प्रभारी और पिछड़ा वर्ग विभाग जिलाध्यक्ष नारायणराव धोटे, घोड़ाडोंगरी प्रभारी लवलेश बब्बा राठौर, प्रदेश सचिव और आमला विधानसभा प्रभारी समीर खान, सेवा दल जिलाध्यक्ष अनुराग मिश्रा, आमला विधानसभा के प्रत्याशी मनोज मालवे, युवक कांग्रेस जिलाध्यक्ष संजय सरदार यादव, पंचायतीराज संगठन के राष्ट्रीय संयोजक ब्रज पांडे, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉक्टर रमेश काकोडिया, अशोक राठौर, अनिल भूसारी, नवनीत आर्य, महासचिव ज्ञानू परते, किसान कांग्रेस जिलाध्यक्ष जगदीश गोचरे, महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष मोनिका निरापुरे, पुष्पा पेंन्द्राम, अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष कमल नागले, ब्लाक प्रभारी राहुल पटेल, कमलाकर बारस्कर, धमेन्द्र गोलू खाकरे, डॉक्टर प्रमोद खाण्डवे, सुभाष यादव, लोकेश पगारिया, प्रशांत वाग्रदे, मिथिलेश सिंह, प्रदीप नागले, किशोर चैहान, अनिल आर्य, महेंद्र पाटिल, नामदेव यादव, सुरेश आर्य, सुरेन्द्रसिंह राजपूत, नवनीत आर्य, महेंद्र भारती, हर्षवर्धन धोटे, विजय पारधी, नेहरूसिंह राजपूत, रवि त्रिपाठी, आदिवासी विकास परिषद के मुन्नालाल वाडिवा, अरविन्द्र पटेल, नरेश मोहरे, नाथूराम पोटे, मतदाता सूची पुनरीक्षण प्रभारी मोनू वाघ, आईटी सेल प्रभारी करण राजपूत, चेतन आर्य, ब्लाक अध्यक्ष मोनू बडोनिया, प्रशांत राजपूत, महेन्द्र पंडोले, चुन्नी यादव, राजू पटेल, विजय आर्य, नेकराम यादव, नीरज राठौर, किशोर चैहान, किशोरसिंह परिहार, छन्नू बेले, विजयकांत जैसवाल, सुनिल जेधे, नवलसिंह ठाकुर, हैबतराव साकरे, भजन शाह, पम्मू आर्य, प्रितेश गंगारे, युवराज अड़लक, तरुण मानकर, यशवंत साकरे, गजानंद खण्डाग्रे, मुलचंद नागले, विरेन्द्र बर्थे, परमेन्द्र राठौर, राजकुमार चैबे, भाउराव धोटे, डॉक्टर दिनेश दवंडे, अर्जुन वामनकर, गणेश भरतपुरे, दीपक बारस्कर, संजय अग्रवाल, नितिन मेहतो, राजकुमार दीवान, मनोज पंडित, विजय उपराले, दानिश पारेख, रूपेश भोरवंशी, भोलाराम पुण्डे, सतीश आर्य, तोफ पटेल, देवराव पटेल, प्रवीण पाल सहित सभी कांग्रेस कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

चार प्रमुख विषयों पर हुई विस्तृत चर्चा

बैठक में चार प्रमुख विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई जिनमें 23 दिसम्बर 2025 से शुरू हो रहे मतदाता सूची पुनरीक्षण दावे-आपत्ति और जागरूकता शिविर, 14 दिसम्बर को दिल्ली में होने वाली महारैली में बैतूल जिले की सहभागिता, 28 दिसम्बर को कांग्रेस के 140वें स्थापना दिवस को हर बूथ पर मनाने की रणनीति तथा मंडलम, सेक्टर और बूथ कमेटियों के गठन पर महत्वपूर्ण विमर्श शामिल रहा। जिला कांग्रेस कमेटी ने सभी कार्यकर्ताओं से सक्रिय भागीदारी का आग्रह किया और 12 दिसम्बर की बैठक में उपस्थित रहकर कार्यक्रमों की सफलता के लिए जिम्मेदारी तय की।

रिश्तेदार की मौत में बेवजह फंसाने का आरोप

चिचोली थाने में की शिकायत

बैतूल | संवाददाता
rashtrabaan.in

चिचोली थाना क्षेत्र के चुडिया निवासी किसान राजेन्द्र यादव पिता हरचंद यादव ने अपने खिलाफ लगाए गए आरोपों को सिरे से खारिज करते हुए थाना चिचोली में लिखित शिकायत की है। उन्होंने बताया कि रिश्तेदारी में लगने वाले कपिल यादव की 18 अक्टूबर को सीताडोंगरी के पास पुलिया से गिरने से मौत हो गई थी। इस घटना के बाद मृतक के परिवारजन सोशल मीडिया पर उनका नाम लेकर झूठे आरोप लगा रहे हैं और उनकी छवि खराब करने की कोशिश की जा रही है।

राजेन्द्र यादव ने बताया कि विगत 26 मार्च को अपनी बेटी के जन्मदिन के निमंत्रण के लिए उनकी कपिल यादव से फोन पर बात हुई थी। इसके बाद उनकी कोई बातचीत नहीं हुई। हादसे वाले दिन वे अपने बेटे का इलाज कराकर पत्नी और साली के साथ बैतूल सरकारी अस्पताल से शाम करीब 6 से 7 बजे वापस घर लौटे थे।

अगली सुबह करीब 8 से 9 बजे वे अपनी साली के साथ चुडिया से दुर्घटना स्थल पहुंचे, लेकिन तब तक पुलिस कपिल को चिचोली ले जा चुकी थी। वहां से वे ससुराल आलमपुर गए और फिर साली व सास के साथ चुनाहजूरी में हुए अंतिम संस्कार में शामिल हुए। इसके बाद मृतक परिवार के फोन निमंत्रण पर वे तेरहवीं में भी शामिल हुए थे।

राजेन्द्र यादव का कहना है कि इसके कई दिनों बाद चिचोली थाना से उन्हें बयान के लिए बुलाया गया। पुलिस ने बताया कि मृतक का परिवार उन पर शक जता रहा है। उन्होंने कहा कि उनका किसी से कोई विवाद नहीं था और न ही वे मृतक के परिवार से बहुत करीबी थे। दूर की रिश्तेदारी होने के कारण उनका आना-जाना भी कम था।

उन्होंने आरोप लगाया कि मृतक की मां, पिता और चाचा सोशल मीडिया पर उनका नाम ले-लेकर उन्हें बदनाम कर रहे हैं। राजेन्द्र यादव ने आशंका जताई कि आने वाले दिनों में उनके साथ कोई घटना होती है तो इसके जिम्मेदार मृतक कपिल यादव का परिवार होगा। उन्होंने थाना प्रभारी से पूरी घटना की निष्पक्ष जांच करने और उन पर झूठे आरोप लगाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

ग्राम केलापुर में अखंड भारत संगठन का 14वां स्थापना दिवस मनाया

क्षत्रिय महासभा राजपूत समाज अखंड भारत ने किया आयोजन

बैतूल | संवाददाता
rashtrabaan.in

ग्राम केलापुर में शुक्रवार 12 दिसंबर को क्षत्रिय महासभा राजपूत समाज अखंड भारत के जिला स्तरीय संगठन का 14वां स्थापना दिवस मनाया गया, जहां बड़ी संख्या में राजपूत समाज के सदस्यों ने कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की।

समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष ठाकुर जगदीश सिंह राघव ने संगठन के उद्देश्यों और पिछले 14 वर्षों में किए गए सेवाकार्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि संगठन ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण पहलें की हैं, जिनमें सिलाई मशीनों का वितरण प्रमुख रहा। उन्होंने आगे बताया कि बिहार के मधुबनी में विगत दिनों पाँच राजपूत समाज के लोगों की असामाजिक तत्वों द्वारा हत्या कर दी गई थी, जिनके परिजनों को संगठन ने सहायता स्वरूप 51-51 हजार रुपये प्रदान किए।

इस अवसर पर जिला कार्यकारी अध्यक्ष रूप सिंह ठाकुर और प्रदेश संगठन मंत्री विनय सिंह राठौड़ ने कहा कि कोरोना काल में संगठन ने प्रत्येक परिवार तक पहुचने का प्रयास किया और जिन लोगों को दवाई, आर्थिक मदद तथा अन्य उपचार संबंधी आवश्यकता थी, उन्हें तुरंत सहायता उपलब्ध कराई गई। कई स्थानों पर भोजन वितरण भी कराया गया। उन्होंने बताया कि संगठन समाज के उत्थान के लिए निरंतर सेवा कार्य कर रहा है।

आरक्षण केवल आर्थिक आधार पर लागू हो

कार्यक्रम में यह भी घोषित किया गया कि संगठन वर्तमान में इस महत्वपूर्ण मांग को लेकर आगे बढ़ रहा है कि जिन लोगों को आरक्षण का लाभ मिल चुका है, उनका आरक्षण समाप्त किया जाए और देश में आरक्षण केवल आर्थिक आधार पर लागू किया जाए। शासन-प्रशासन से संगठन इस दिशा में अपनी लड़ाई जारी रखेगा और इस उद्देश्य को संगठन के प्रमुख संकल्पों में शामिल कर पूरे देश में इसका प्रसार करेगा। भविष्य की योजनाओं में जिला, प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर संगठन के उद्देश्यों को भारतवर्ष के सभी क्षेत्रों में पहुचाने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित रहे जिनमें रवि तोमर, गीतेश चौहान, देवी सिंह चौहान, रवी शंकर सी. तोमर, शैलेंद्र तोमर, लाल चौहान, तेजीलाल चौहान, नन्हीया राजपूत, नैनसिंह राजपूत, नैना सिंह राजपूत, पुनम राजपूत, तनु चौहान, महेश्वरी राजपूत, भुवनेश्वरी राजपूत, निशा सिसोदिया सहित अनेक सदस्य शामिल हुए।

मध्य क्षेत्र बिजली कर्मचारी महासंघ की नई कार्यकारिणी घोषित

बैतूल। मध्य प्रदेश बिजली कर्मचारी संघ (महासंघ) मध्य क्षेत्र भोपाल के चुनाव प्रदेश महामंत्री भारतीय मजदूर संघ मध्य प्रदेश कुलदीप सिंह गुर्जर और प्रदेश महामंत्री मध्य प्रदेश बिजली कर्मचारी महासंघ सुशील पांडे की अध्यक्षता में शांतिपूर्ण और गरिमामय वातावरण में संपन्न हुए, जिसमें मध्य क्षेत्र कार्यकारिणी का गठन किया गया और बैतूल जिले को महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व मिला।

नई कार्यकारिणी में मुलताई बैतूल से उपाध्यक्ष आदरणीय संतोष कुमार गुप्ता को मनोनीत किया गया। संयुक्त महामंत्री मंत्री पद पर वृत कार्यालय बैतूल से आदरणीय निरंजन सिंह ठाकुर को स्थान मिला। चिचोली बैतूल से आदरणीय श्याम किशोर सोनी को कार्यकारिणी में शामिल किया गया, वहीं एसटीएम बैतूल से आदरणीय बाबूलाल पवार को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई। इसके साथ ही मुलताई बैतूल से आदरणीय पर्वत राव ठाकरे को कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया।

सिकल सेल मरीजों के घर-घर पहुंची आयुष औषधि, जिले में शुरू हुई नई पहल

आयुष की एड-ऑन थेरेपी से सिकल सेल मरीजों में जागी नई उम्मीद

बैतूल | संवाददाता
rashtrabaan.in

जिले में आयुष विभाग द्वारा सिकल सेल एनीमिया से पीड़ित रोगियों को पूरक आयुर्वेदिक औषधियों का व्यापक वितरण किया गया। आयुक्त के आदेश के बाद जिला स्तर पर कलेक्टर बैतूल की अध्यक्षता में सिकल सेल एनीमिया समन्वय समिति बनाई गई, जिसमें लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, जिला पंचायत और नगरीय प्रशासन विभाग को सदस्य बनाया गया।

आदेशों के अनुपालन में जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर की अध्यक्षता में सिकल सेल यूनिट गठित की गई और डॉक्टर सरिता डेहरिया को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया। जिले के सभी 10 ब्लॉकों में चिकित्सा अधिकारियों को नोडल बनाया गया, ताकि कार्यों की सूक्ष्म निगरानी की जा सके। सिकल सेल रोगियों की सूची सीएमएचओ कार्यालय से प्राप्त की गई।

आयुष विभाग ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन से चिन्हित उन सभी सिकल सेल रोगियों तक औषधियां पहुंचाई, जो पहले से एलोपैथिक उपचार ले रहे हैं। आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भेजी गई ये औषधियां मानक संचालन प्रक्रिया (एस ओ) के तहत घर-घर जाकर वितरित की गई। औषधि वितरण की जानकारी संचालनालय को हर 15 दिन में भेजी गई। औषधि के साथ रोगियों को योगाभ्यास, प्राणायाम, ध्यान और सरल योग क्रियाओं की जानकारी भी दी गई।

722 रोगियों को दी आयुर्वेदिक एड-ऑन थेरेपी

10 से 13 नवंबर तक विशेष शिविर आयोजित किए गए, जिनमें आए 722 रोगियों को आयुर्वेदिक एड-ऑन थेरेपी दी गई। गर्भवती सिकल सेल रोगियों की जांच और प्रबंधन के लिए 18 नवंबर को जिला स्तरीय कार्यक्रम रखा गया था। जिला आयुष अधिकारी डॉक्टर योगेश चौकीकर ने स्वयं फील्ड में जाकर निरीक्षण किया और औषधि वितरण की समीक्षा की। भीमपुर और भैंसदेही ब्लॉक में लक्ष्य कम रहने पर अतिरिक्त अधिकारियों की नियुक्ति की गई। सीएमएचओ बैतूल से प्राप्त कुल 1238 सिकल सेल रोगियों की सूची के आधार पर आयुष विभाग की टीम ने घर-घर पहुंचकर सभी मरीजों को आयुर्वेदिक औषधियां वितरित कीं।

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने दिया हरसंभव मदद का आश्वासन

रामलला रामकथा आयोजन समिति की बैठक आयोजित

बैतूल | संवाददाता
rashtrabaan.in

आगामी 19 से 25 दिसंबर तक शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम में होने वाली रामलला रामकथा की तैयारियां अब युध्द स्तर पर जारी हैं। इस संबंध में श्री रामलला रामकथा आयोजन समिति के सदस्यों ने एक बैठक का आयोजन समिति संरक्षक और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल के पूर्व निवास पर किया। जिसमें आयोजन की रूपरेखा तथा अन्य सेवाओं पर उपस्थित धर्म प्रेमी बन्धुओ द्वारा विस्तार से चर्चा की गई। बैठक की शुरुआत में आयोजन समिति के सदस्य सुनील द्विवेदी ने सभी के समक्ष रामकथा आयोजन की विस्तार से रूपरेखा रखी। इसके पश्चात समिति के सदस्य बलराम जसूजा, मनोज भार्गव, योग शिक्षक रोशनलाल मौखड़े, योग प्रशिक्षक सुनील कुबड़े, त्रिपाठी सर, राजेश मदान आदि ने अपने-अपने विचार रखें। इसके पश्चात नपा अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर ने आयोजन को लेकर नगर पालिका की ओर से हरसंभव मदद का आश्वासन देते हुए कहा कि वे स्वयं अधिक से अधिक समय रामकथा में रहेंगी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि यह हम सब भारतीयों के लिए बड़े गर्व की बात है कि सदियों के संघर्ष के बाद हमारी संस्कृति, श्रद्धा और गौरव का केंद्र अयोध्या का राममंदिर निर्माण पूर्ण हुआ और गत 25 नवंबर को हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस के सरसंघचालक मोहन भगवत द्वारा शिखर पर भगवा धर्म ध्वजा लहराई गई और इसी गौरवशाली धर्म ध्वजा को लेकर राम जन्मभूमि न्यास के पूर्व अध्यक्ष डॉ. रामविलास वेदांती बैतूल पधार रहे हैं। अब इस अवसर को ऐतिहासिक और चिरस्थाई बनाने के लिए बैतूल में इस रामकथा का कार्यक्रम होने जा रहा है। यह बैतूलवासियों के लिए बड़े गर्व की बात है। उन्होंने आयोजन को लेकर हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया। यहां उल्लेखनीय है कि अयोध्या से धर्म ध्वजा लेकर बैतूल आ रहे रामजन्म भूमि न्यास के पूर्व अध्यक्ष श्री रामविलास वेदांती महाराज की रामलला रामकथा 19 से 25 दिसंबर तक आयोजित होना है। समिति के अनुसार 17 दिसंबर की शाम को परम पूज्य वेदांती महाराज का बैतूल आगमन होगा।

जिन्हें रेलवे स्टेशन से हाउसिंग बोर्ड गंज स्थित संत निवास तक गाजे-बाजे के साथ लेकर आया जाएगा। 18 दिसंबर को दोपहर 1 बजे सभी रामभक्त महिला- पुरूष न्यू बैतूल स्कूल ग्राऊंड में एकत्रित होंगे। यहां हनुमान मंदिर से धर्म ध्वजा यात्रा और कलश यात्रा धूमधाम से निकलेगी। जो थाना चौक, लल्ली चौक, बस स्टैंड, राजा भोज चौक, शिवाजी चौक होते हुए शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम पहुंचेगी।

सारनी नगर पालिका के पार्षदों ने की परिषद का विशेष सम्मेलन आहूत करने की मांग

सारनी नगर पालिका परिषद अधिनियम 1961 की धारा 43 के तहत परिषद का विशेष सम्मेलन बुलाने की मांग की

सारणी | संवाददाता
rashtrabaan.in

नगर पालिका परिषद सारनी के पार्षदों ने मुख्य नगर पालिका अधिकारी , नगर पालिक अध्यक्ष और जिला कलेक्टर को पत्र लिखकर नगर पालिका परिषद अधिनियम 1961 की धारा 43 के तहत परिषद का विशेष का सम्मेलन आहूत करने की मांग की है पार्षदों के पत्र में उल्लेख है की जलआवर्धन के नवीन नल कनेक्शन एवं बाबा मठारदेव मेले में संबंधित कार्यक्रम परिषद के लिए परिषद का विशेष सम्मेलन में चर्चा एवं निर्णय के लिए परिषद का विशेष सम्मेलन आहूत करने के मांग की है। परिषद का विशेष सम्मेलन के लिए नगर पालिका के 36 में से भाजपा कांग्रेस मिलाकर कुल 28 पार्षदों ने हस्ताक्षर किए है 6 पार्षदों ने क्षेत्र के बाहर होने के कारण पत्र पर हस्ताक्षर नही किये लेकिन दूरभाष पर अपनी सहमति दी है वहीं वार्ड 36 के पार्षद दसरथ सिंह जाट द्वारा पत्र पर हस्ताक्षर करने से मना किया गया। पत्र को नगर पालिका एवं जिला कलेक्टर कार्यालय में जमा कर दिया है।

राष्ट्रबाण
सिवनी, शनिवार 13 दिसंबर 2025

बालाघाट राष्ट्रबाण

● बैहर ● बिरसा ● कटंगी ● तिरोड़ी ● कटंगी ● खैरलांजी ● किरनापुर ● लालबर्रा ● लांजी ● परसवाड़ा ● वारासिवनी

नैनपुर सिविल अस्पताल में शाम की ओपीडी ठप

डॉक्टर पर निजी प्रेक्टिस में व्यस्त होने के लग रहे आरोप

नियमों के बावजूद लापरवाही, बीएमओ बोले- 'दिखवाते हैं'

राष्ट्रबाण | नैनपुर | संवाददाता
rashtrabaan.in

नैनपुर सिविल अस्पताल की शाम की ओपीडी लगातार प्रभावित हो रही है। मरीजों का आरोप है कि निर्धारित समय पर कई डॉक्टर ओपीडी में मौजूद नहीं रहते और इसी दौरान उन्हें निजी क्लीनिकों में प्रैक्टिस करते देखा गया, जिससे सरकारी सेवाएँ बाधित हो रही हैं। सूत्रों के अनुसार, संविदा में पदस्थ फिजियोथैरेपिस्ट भी अस्पताल समय में ही निजी क्लीनिक में मरीज देखने के आरोपों से घिरे हैं। मरीजों के अनुसार, अस्पताल में आवश्यकता होने पर भी उन्हें क्लीनिक पर आ जाइए कहा जाता है, जो कि सेवा नियमों का स्पष्ट उल्लंघन है।

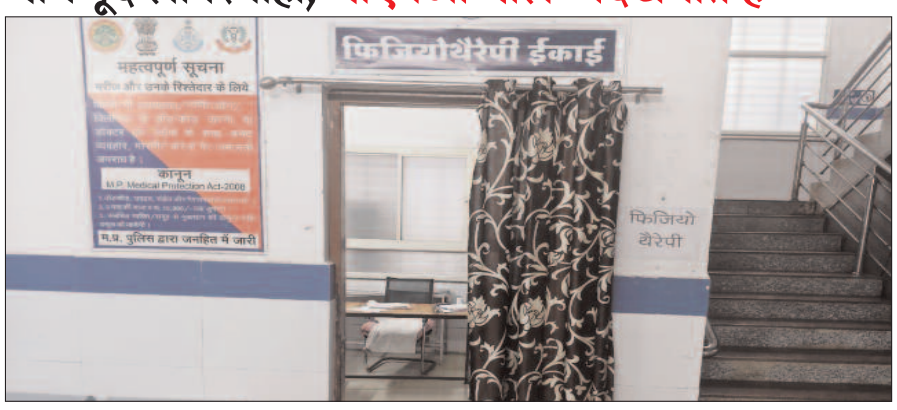

सरकारी नियम साफ- सरकारी डॉक्टर निजी प्रैक्टिस नहीं कर सकते

राज्य शासन द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कोई भी सरकारी डॉक्टर, अधीक्षक या प्रभारी निजी चिकित्सकीय गतिविधियाँ (प्राइवेट प्रैक्टिस) नहीं कर सकते। सेवा में रहते हुए किसी निजी अस्पताल, क्लीनिक या नर्सिंग होम में उपचार देना प्रतिबंधित है। 1997 एवं 1999 के शासन आदेश स्पष्ट रूप से कहते हैं कि सरकारी चिकित्सक, मेडिकल कॉलेजों, जिला अस्पतालों एवं स्वास्थ्य संस्थानों में नियुक्त चिकित्सक निजी प्रैक्टिस नहीं करेंगे। आदेश का उल्लंघन करने पर विभागीय कार्रवाई का प्रावधान है। इन निर्देशों के अनुसार ड्यूटी समय में निजी क्लीनिक चलाना गंभीर अनियमितता मानी जाती है।

बीएमओ की प्रतिक्रिया

जब बीएमओ डॉ. राजीव चावला से पूछा गया कि डॉक्टरों की अनुपस्थिति और ड्यूटी टाइम में निजी प्रैक्टिस के आरोपों पर क्या कार्रवाई होगी, तो उन्होंने संक्षिप्त जवाब दिया— 'दिखवाते हैं'।

मरीजों में नाराज़गी

मरीजों का कहना है- नियम तो हैं, लेकिन पालन कोई नहीं करता। अस्पताल की शाम की ओपीडी बंद रहती है और निजी क्लीनिकों में भीड़ लगी रहती है। लोगों ने मांग की है कि स्वास्थ्य विभाग में शाम की ओपीडी की नियमित मॉनिटरिंग करे। ड्यूटी टाइम में निजी प्रैक्टिस पर स्पष्ट कार्रवाई करे। उपस्थित—अनुपस्थित डॉक्टरों की सार्वजनिक सूची जारी करे। ताकि सरकारी अस्पताल की सेवाएँ सुचारू रूप से चल सकें।

ग्राम पौनेरा में जल जीवन मिशन ने बढ़ाई उम्मीदें

जल्द मिलेगी हर घर नल से शुद्ध पेयजल की सौगात

राष्ट्रबाण | बालाघाट | डेस्क
rashtrabaan.in

बालाघाट जिले की वारासिवनी तहसील के ग्राम पौनेरा में जल जीवन मिशन के तहत संचालित नल-जल योजना तेजी से पूर्णता की ओर बढ़ रही है। योजना के पूरा होते ही ग्रामीणों की वर्षों पुरानी पेयजल समस्या का स्थायी समाधान हो जाएगा। विशेषकर महिलाओं में इस योजना को लेकर उत्साह साफ झलक रहा है, क्योंकि अब उन्हें दूर-दूर से पानी भरकर लाने की परेशानी से मुक्ति मिलने वाली है।

जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर स्थित पौनेरा ग्राम की जनसंख्या करीब 705 है। अब तक यहां पेयजल का मुख्य स्रोत केवल हैंडपंप और कुएं थे। बाहरी निस्तार के लिए ग्रामीणों को तालाब से पानी लाना पड़ता था। गर्मी के मौसम में यह समस्या और भी गंभीर रूप ले लेती थी।

जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्राम में नल-जल योजना का काम युद्धस्तर पर जारी है। योजना के तहत 3500 मीटर लंबाई की पाइपलाइन बिछाने का कार्य पूर्ण हो चुका है। वहीं 50 किलोलीटर

क्षमता वाली उच्च स्तरीय पानी की टंकी का निर्माण 70 प्रतिशत तक और 20 हजार लीटर क्षमता वाले सम्पवेल का निर्माण 80 प्रतिशत तक पूरा हो चुका है। कार्य पूरा होने के बाद ग्राम पौनेरा के प्रत्येक घर को क्रियाशील नल कनेक्शन मिलेगा, जिससे ग्रामीणों को प्रतिदिन शुद्ध एवं सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जा सकेगा। इससे न केवल पानी की किल्लत समाप्त होगी बल्कि ग्रामीणों के स्वास्थ्य और जीवनस्तर में भी सकारात्मक बदलाव आएगा।

ग्रामवासियों ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव तथा लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग बालाघाट के प्रति आभार जताया है। उनका कहना है कि जल जीवन मिशन ने गाँव के विकास की दिशा में नई उम्मीदें जगाई हैं और अब हर घर तक पानी पहुंचने का सपना साकार होने जा रहा है।

पीएम जनमन योजना से बदला बैगा समुदाय की सुकवारा बाई का जीवन

कच्चे घर से पक्के मकान तक पहुंचा सम्मान, सुरक्षा और नई उम्मीदों का सफर

राष्ट्रबाण | बालाघाट | डेस्क
rashtrabaan.in

बालाघाट जिले के किरनापुर विकासखंड के ग्राम कुण्डे की विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा समुदाय की महिला सुकवारा बाई पति परसराम का जीवन अब नई दिशा पकड़ चुका है। प्रधानमंत्री जनमन योजना ने उनके सपनों को साकार करते हुए न केवल उन्हें एक पक्का मकान दिया, बल्कि उनके आत्मसम्मान, सुरक्षा और भविष्य की उम्मीदों को भी मजबूत किया है। पहले सुकवारा बाई मिट्टी और फूस से बने कच्चे घर में रहती थीं। बरसात के दिनों में टपकती छत और कमजोर दीवारें उनके परिवार के लिए चिंता और परेशानी का कारण बनी रहती थीं। मगर आज स्थिति बिल्कुल बदल चुकी है। योजना के अंतर्गत मिले सीमेंट-कांक्रीट के पक्के मकान ने उनके जीवन में स्थिरता और सुरक्षा की नई रोशनी भर दी है। गांव में उनका सम्मान बढ़ा है और वे आत्मविश्वास से भर चुकी हैं।

सम्मान और आत्मविश्वास का नया अध्याय

नए पक्के घर ने सुकवारा बाई के जीवन में खुशी का ऐसा रंग भरा, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। अब बारिश का डर नहीं, न ही मेहमान आने पर शर्मिंदगी। उनके अनुसार ÷यह छोटा सा पक्का घर मेरे आत्मसम्मान की पहचान बन गया है।÷ वनोपज संग्रहण और मजदूरी से परिवार चलाने वाली सुकवारा बाई कभी नहीं सोच पाती थीं कि उनका अपना मजबूत घर होगा। लेकिन पीएम जनमन योजना ने उनका वर्षों पुराना सपना पूरा कर दिया।

सरकारी योजनाओं से मजबूत हुआ जीवन

मात्र साक्षर होने के बावजूद सुकवारा बाई शिक्षा का महत्व अच्छी तरह जानती हैं। वे अपने बच्चों को बेहतर पढ़ाई के लिए प्रेरित करती हैं, ताकि वे उनसे बेहतर जीवन जी सकें। सरकार की विभिन्न योजनाओं ने उनके परिवार को आर्थिक रूप से सशक्त किया है। सुकवारा के परिवार को मनरेगा के तहत गांव में नियमित काम मिल रहा है, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय वृद्धा पेंशन योजना से मासिक पेंशन मिल रही है,पोषण आहार अनुदान योजना के तहत 1000 रुपये मासिक सहायता मिल रही है और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत हर माह 35 किलो मुफ्त राशन मिल रहा है। सुकवारा बाई को आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत 5 लाख रुपये तक के मुफ्त उपचार की सुविधा भी मिली है। इन सभी योजनाओं ने मिलकर उसके जीवन की कठिनाइयों को कम किया है और भविष्य को सुरक्षित बनाया है।

पशु चिकित्सा विभाग बालाघाट में एकीकृत नमूना सर्वेक्षण पर प्रशिक्षण आयोजित

राष्ट्रबाण | बालाघाट | डेस्क
rashtrabaan.in

कार्यालय उपसंचालक, पशु चिकित्सा सेवाएं जिला बालाघाट द्वारा 11 दिसंबर 2025 को पाशुपालन और डेयरी विभाग की केंद्रीय प्रायोजित योजना के तहत एकीकृत नमूना सर्वेक्षण (ढ्रस्स्) विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह सर्वेक्षण दूध, अंडा, मांस, ऊन आदि प्रमुख पशुधन उत्पादों के आंकलन में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवाएं बालाघाट डॉ एन डी पुरी की अध्यक्षता मंम किया गया। इसमें सभी पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ अधिकारी, पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी तथा सांख्यिकी अमले ने भाग लिया। जिला नोडल अधिकारी डॉ. निधि कावड़े (पशु चिकित्सा शल्यज्ञ) द्वारा प्रतिभागियों को एकीकृत नमूना सर्वेक्षण योजना की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। उन्होंने ऑनलाइन डेटा एंट्री तथा फील्ड कार्य से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी मार्गदर्शन प्रदान किया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य सर्वेक्षण कार्य को अधिक सटीक, सुगठित और प्रभावी बनाना है, ताकि पशुधन उत्पादों से संबंधित विश्वसनीय आंकड़े तैयार किए जा सकें। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

कमला नेहरू कन्या महाविद्यालय में मनाया गया मानवाधिकार दिवस

बालाघाट। शासकीय कमला नेहरू कन्या महाविद्यालय बालाघाट में राजनीतिशास्त्र विभाग द्वारा मानव अधिकार दिवस के उपलक्ष्य में निबंध प्रतियोगिता एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. निधि ठाकुर के मार्गदर्शन में किया गया। निबंध प्रतियोगिता का विषय भारत में मानव अधिकार की चुनौतियां था। निबंध प्रतियोगिता में विभिन्न संकायों से 26 छात्राओं ने प्रतिभागिता की साथ ही पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया जिसका विषय जलवायु परिवर्तन और मानव अधिकार था। इसमें विभिन्न संकाय से 10 छात्राओं की सहभागिता रही।

वारासिवनी सिविल न्यायालय में नेशनल लोक अदालत आज

राजीनामा समझौता योग्य मामलों का होगा निपटारा

राष्ट्रबाण | बरघाट | डेस्क
rashtrabaan.in

बालाघाट जिले के तहसील सिविल व्यवहार न्यायालय परिसर वारासिवनी में 28 नवंबर शुक्रवार को माननीय न्यायाधीशों एवं वकीलों की 13 दिसंबर को होने वाली नेशनल लोक अदालत के विषय पर एक आवश्यक बैठक आहुत की गई। तत्संबंध में प्राप्त जानकारी अनुसार नेशनल लोक अदालत तहसील सिविल व्यवहार न्यायालय परिसर वारासिवनी में आज 13 दिसंबर 2025 शनिवार को नेशनल लोक अदालत का आयोजन 11 बजे से शाम 5 बजे तक किया जा रहा है। इस नेशनल लोक अदालत के माध्यम से राजीनामा समझौता योग्य मामले दंडिक, विविध, निष्पादन एवं दंडिक अपील, धारा- 125 द प्र स एवं उसका निष्पादन धारा- 138 एन आई एक्ट के मामले तथा घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम के मामले एवं अन्य ऐसे मामले जिनमें राजीनामा समझौता स्वीकार योग्य है। मामले सिविल प्रकृति के मामले, निष्पादन विविध तथा वाहन दुर्घटना से संबंधित क्षतिपूर्ति के मामले, पारिवारिक विवाद, वैवाहिक विवाद एवं अन्य राजीनामा समझौता योग्य मामले, विद्युत विभाग, नगर पालिका, नगर पंचायत, प्रिलिटिगेशन मामले का निराकरण भी आपसी समझौते से किया जावेगा एवं अन्य सभी राजीनामा समझौता योग्य मामलों का दोनों पक्षों की सहमति से निपटारा किया जाएगा।

कलेक्टर ने ली राजस्व अधिकारियों की बैठक

राष्ट्रबाण | बालाघाट | डेस्क
rashtrabaan.in

कलेक्टर श्री मृणाल मीना ने 12 दिसम्बर को जिले के सभी एसडीएम, तहसीलदार एवं नायब तहसीलदारों की बैठक लेकर राजस्व प्रकरणों की विस्तार से समीक्षा की। बैठक में अपर कलेक्टर श्री जीएस धुर्वे, श्री डीपी बर्मन, संयुक्त कलेक्टर श्री राहुल नायक, डिप्टी कलेक्टर श्री प्रदीप कौरव, एसडीएम श्री गोपाल सोनी उपस्थित थे। सभी एसडीएम एवं तहसीलदार व नायब तहसीलदार वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से बैठक में उपस्थित थे।

बैठक में सर्वप्रथम फार्मर रजिस्ट्री की समीक्षा की गई। इस दौरान निर्देशित किया गया कि जमीन के जितने भी खातेदार है उन सभी की फार्मर आईडी होना चाहिए और सभी के आधार नंबर खसरा से लिंक होना चाहिए। इसी आधार पर भविष्य में किसानों को खाद का वितरण किया जाएगा। इसलिए सभी किसानों एवं खाताधारकों की फार्मर आईडी का कार्य शीघ्रता से पूर्ण करने के निर्देश दिये गए। लामता तहसील में फार्मर आईडी एवं फार्मर रजिस्ट्री का कार्य संतोषजनक नही पाया गया। वन पट्टाधारक किसानों की भी फार्मर आईडी बनाना है इसके लिए बैहर, बिरसा, परसवाड़ा एवं लांजी तहसीलदार को निर्देशित किया गया कि अपने क्षेत्र के सभी वन पट्टाधारक किसानों की फार्मर आईडी शीघ्रता से बनवाए। इस दौरान बताया गया कि जिले में 6929 वन पट्टाधारक किसानों की फार्मर आईडी बनाना है।

बैठक में स्वामित्व योजना के अंतर्गत ग्राउंड ट्रूथिंग की समीक्षा की गई और निर्देशित किया गया कि चयनित ग्रामों के अंतिम प्रकाशन की कार्यवाही शीघ्रता से पूर्ण करें। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत संदिग्ध खातों की जांच एवं सत्यापन का कार्य शीघ्रता से पूर्ण करने कहा गया। नगरीय क्षेत्र में धारणाधिकार के प्रकरणों का शीघ्र निराकरण कर पात्र हितग्राहियों को धारणाधिकार पत्र वितरित करने के निर्देश दिये गए। नजूल प्रकरणों की समीक्षा के दौरान नजूल पट्टो का नवीनीकरण प्राथमिकता से करने के निर्देश दिये गए। भू-राजस्व एवं अन्य मदों की वसूली का कार्य तत्परता के साथ करने के निर्देश दिये गए और कहा गया कि जिन प्रकरणों में आरआरसी जारी हो गई है उनमें वसूली के लिए कुर्की एवं नीलामी की कार्यवाही करें। प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत नगरीय क्षेत्र बालाघाट में 01 करोड़ रुपए से अधिक एवं वारासिवनी में 78 लाख रुपए की वसूली के लिए कुर्की नीलामी की कार्यवाही करने के निर्देश दिये गए।

बैठक में आरसीएमएस पोर्टल पर दर्ज अविवादित नामांतरण, सीमांकन एवं बटवारा के प्रकरणों का समय सीमा के भीतर निराकरण करने के निर्देश दिये गए। सायबर तहसील के अंतर्गत नामांतरण के प्रकरण समय सीमा के भीतर अनिवार्य रूप से निराकृत करने कहा गया। बैठक में वन ग्रामों के राजस्व ग्रामों में परिवर्तन, भू-अर्जन एवं शासकीय कार्यों के लिए भूमि आवंटन प्रकरणों की भी समीक्षा की गई। तहसीलदारों को निर्देशित किया गया कि अतिक्रमण हटाने के प्रकरणों में तत्परता के साथ कार्यवाही करें और यह केवल कागजों पर नहीं बल्कि मौके पर भी दिखना चाहिए। प्राकृतिक आपदा से राहत के प्रकरणों का तत्परता के साथ निराकरण करने के निर्देश दिये गए। इसी प्रकार सड़क दुर्घटना में सहायता राशि के प्रकरणों को शीघ्र निराकृत कर पीड़ित परिवार को सहायता राशि का भुगतान तत्परता के साथ करने कहा गया। बैठक में सीएम हेल्पलाईन के प्रकरणों की भी समीक्षा की गई और निर्देशित किया गया कि इन प्रकरणों का शीघ्रता से निराकरण किया जाए।

राजस्व प्रकरणों की समीक्षा के दौरान लामता तहसील की प्रगति संतोषजनक नही पाए जाने पर लामता तहसीलदार एवं वहां के लिपिक का 5-5 दिन का वेतन काटकर राजसात करने के निर्देश दिये गए। धारणाधिकार के प्रकरणों को समय पर प्रस्तुत नही किये जाने के लिए कलेक्ट्रेट के रीडर को कारण बताओ नोटिस जारी करने कहा गया।

बाल विवाह मुक्त भारत अभियान

बोदा, भटेरा, कुम्हारी के विद्यालय में शिविर का हुआ आयोजन

राष्ट्रबाण | बालाघाट | डेस्क
rashtrabaan.in

कलेक्टर श्री मृणाल मीना और जिला कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती दीपमाला मंगोदिया के निर्देशन में 'बाल विवाह मुक्त भारत अभियान' के तहत वन स्टॉप सेंटर की प्रशासक रचना चौधरी द्वारा लगातार जिले के शासकीय स्कूलों में जागरूकता शिविर आयोजित किए जा रहे है। इसी कड़ी में 12 दिसम्बर को शासकीय हाईस्कूल बोदा, भटेरा, पीएम श्री उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कुम्हारी और नमन विद्यापीठ हाईस्कूल भटेरा चौकी में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें छात्रों को बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006 के महत्वपूर्ण प्रावधानों के बारे में सरल भाषा में जानकारी दी गई। शिविरों में बाल विवाह के कारण लड़कियों की शिक्षा रुक जाने, करियर और आत्मनिर्भरता पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को भी बच्चों के सामने रखा गया। उन्हें समझाया गया कि कम उम्र में गृहस्थी का बोझ उठाने से न सिर्फ शिक्षा छूट जाती है, बल्कि मानसिक, सामाजिक और शैक्षणिक विकास भी रुक जाता है। इस दौरान बताया गया कि बाल विवाह कराना, करवाना या उसमें शामिल होना गंभीर अपराध है, जिसके लिए दो वर्ष तक की सज़ा और एक लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इसी दौरान साइबर सेल की टीम ने बच्चों को यह भी चेताया कि सोशल मीडिया पर फैल रही गलत जानकारी और भ्रामक सलाह की वजह से कई बार बच्चे अनजाने में जोखिम भरी स्थितियों में फंस जाते हैं। टीम ने ऑनलाइन फ्रॉड, संदिग्ध लिंक, ब्लैकमेलिंग और साइबर अपराधों से बचने के तरीके बताए, साथ ही यह भी कहा कि किसी भी तरह की धमकी या जबरन विवाह से जुड़ी ऑनलाइन गतिविधि तुरंत साइबर हेल्पलाइन या पुलिस में रिपोर्ट करनी चाहिए। किशोर इकाई ने बच्चों को समझाया कि कम उम्र में किसी भी गैरकानूनी गतिविधि जैसे बाल विवाह में सहयोग, हिंसा या साइबर अपराध में शामिल होना भी कानून के तहत दंडनीय है। किशोर न्याय अधिनियम में इसके लिए स्पष्ट प्रावधान हैं और कानून की अनभिज्ञता किसी को अपराध से मुक्त नहीं करती। कार्यक्रम के अंत में बच्चों को यह भी बताया गया कि किसी भी तरह का संदेह, खतरा या जानकारी होने पर वे 1098 चाइल्डलाइन, पुलिस थाना, जिला बाल संरक्षण इकाई, बाल कल्याण समिति या वन स्टॉप सेंटर बालाघाट से तुरंत संपर्क कर सकते हैं। इन सभी शिविरों के सफल संचालन में वन स्टॉप सेंटर की केस वर्कर गायत्री स्वामी, किशोर इकाई से रेहाना खान और सीता यूके, तथा साइबर सेल से मेघा पांडेय का विशेष सहयोग रहा। स्कूलों के प्राचार्य, शिक्षक और बड़ी संख्या में छात्रों ने उत्साह के साथ सहभागिता कर कार्यक्रम को सफल बनाया।

राष्ट्रबाण
सिवनी, शनिवार 13 दिसंबर 2025

सिवनी राष्ट्रबाण

• बरघाट • छपारा • धनोरा • घंसौर • केवलारी • कुरई • लखनादौन • सिवनी ग्रामीण

राधादेही ग्राम विकास के नाम से जमीन का चरित्र हनन

राष्ट्रबाण | सिवनी | संवाददाता
rashtrabaan.in

राष्ट्रबाण द्वारा लगातार प्रमुखता से तालाब की आड़ में पत्थर माफिया के खेल को उजागर किया जा रहा है। साथ में विकास के नाम पर सरकारी खजाने की प्रशासन की आंखों के सामने खुली लूट का तमाशा बरकरार है। खबरें प्रकाशित होने के बाद से ही पत्थर माफिया के काले साम्राज्य में भूचाल आ गया है। राधादेही तालाब के साथ ग्राम विकास के नाम से हो रहे लगातार घोटाले जैसे गंभीर मुद्दे सीधे तौर पर खनिज विभाग के दागी अफसरों और फोटो वाले बड़े राजनेताओं को कटघरे में खड़ा कर दिया हैं।

सच की आग बुझाने के लिए वही ओछी मानसिकता का सहारा तो नहीं ले रहे केशव अग्रवाल सहारा?

खबर की स्याही सूखने से पहले ही विश्वसनीय सूत्रों द्वारा जानकारी मिली है कि केशव अग्रवाल द्वारा कहा जा रहा कि मैं ग्रामवासियों के हित में कार्य कर रहा हूं और कुछ ग्रामीणों द्वारा झूठी शिकायतें कराकर मेरे ऊपर दबाव बनाने की कोशिश यह आरोप वह कामटी नागपुर से बैठकर सीधे ग्राम पंचायत बिठली के ग्राम राधादेही के निवासियों के ऊपर वार है। सोचने की बात है दूसरे प्रदेश में बैठकर कोई अपने हित में सोचेगा या फिर जनहित के बारे में यह बात सब बहुत अच्छे से जानते हैं कि अब उनका पूरा 'काला खेल बेनकाब' हो रहा है। जिससे वह तिल मिलकर वह इस प्रकार की बातें बीच चौक चौराहा में कर रहा है।

खजाना बचाने की जंग

यह केवल किसी व्यक्तिगत की लड़ाई नहीं है, यह सरकारी खजाने पर चल रही खुली लूट है। अब वक्त आ गया है कि जिले में हो रही लुटेरे माफियो पर कानूनी हथौड़ा बरसे का इंतजार है। वही ग्रामवासियों का आक्रोश है कि यह लड़ाई सिर्फ कागजी घोड़े दौड़ाने की नहीं, बल्कि ग्रामवासियों जनता के विश्वास और ग्राम की धरती में जमा धन को बचाने की बन चुकी है। यह मुद्दा अब केवल स्याही की जंग नहीं, बल्कि कुदरत का दिया हुआ खजाना बचाने की खुली लड़ाई बन गई है।

केशव अग्रवाल, क्रेशर संचालक : पैसे के गर्मी दिखा पत्थर माफिया।

शिवनंदन चंद्रवंशी, सरपंच पति : केशव की बना कठपुतली।

वही अन्य में आरोपों लगाकर शासन का ध्यान भटकाने की साज़िश?

सिवनी के गलियारों में कानाफूसी नहीं, बल्कि खुली चर्चा है कि लगातार अखबार की नुकीली धार ने केशव अग्रवाल और सरपंच पति शिवनंदन चंद्रवंशी को बेनकाब कर रहा है। इसलिए दोनों आक्रोश होकर झूठी शिकायतों की बात कर रहे है जो सिर्फ महज ग्रामीणों में दवाब बनाने की चाल है, ताकि अपनी लुट की खदान तालाब के आड़ में पर्दे के पीछे चलती रही। सवाल यह है कि क्या राधादेही तालाब की खुली लूट मामले से परेशान होकर इस प्रकार की हरकत करना किसी बहरूपिया के काम जैसा ही है। पत्थर माफिया के काले करनामें की सच्चाई उजागर होने से वह कामठी में बैठकर अपने राजनेता वाले अकाओ के भरोसे अपने हर एक अवैध कामो को नियंत्रण रखने की दम भरता है। वही सबसे बड़ा संदेह यह है कि क्या बिना कोई सबूत के मामूली आरोपों को चर्चा बनकर चौक चौराहा में बाते उछालकर सरकारी खजाने की खुली लूट जैसे मुख्य गंभीर मुद्दे से जिले वाशियो का ध्यान साजिश के तहत भटकाने की हर एक संभव कोशिश की जा रही है।

सिवनी में पति की लाश कुएं में मिली

2 दिन पहले पत्नी की गला घोंटकर हत्या हुई थी, परिजन ने पति पर लगाया था आरोप

राष्ट्रबाण | सिवनी | संवाददाता
rashtrabaan.in

सिवनी जिले के बरघाट थाना क्षेत्र के बम्हनी गांव में खेत में 25 वर्षीय महिला सरस्वती जामरे का शव दो दिन पहले 10 दिसंबर को मिला था। शुक्रवार को उसके पति नितेंद्र की लाश कुएं में मिली है। पुलिस जांच में यह बात सामने आई है कि महिला की गला घोंटकर हत्या की गई थी।

खेत की मेढ़ पर मिला था महिला का शव

बरघाट थाना प्रभारी मोहनीश बेस ने बताया कि बम्हनी निवासी सरस्वती जामरे की शादी इसी साल 21 मार्च को नितेंद्र के साथ हुई थी। रात में दोनों खाना खाकर सोए थे, लेकिन अगले दिन सुबह सरस्वती का शव गांव के फागलाल के खेत की मेढ़ पर मृत अवस्था में मिला।

चरित्र संदेह में की गई हत्या

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दीपक मिश्रा ने बताया कि महिला गर्भवती थी और विवाह के बाद से ही उसका पति नितेंद्र उसके चरित्र पर संदेह करता था। मायके वालों ने भी पुलिस को यही जानकारी दी थी। गवाहों के आधार पर यह पाया गया कि महिला की हत्या उसके पति ने की है। इसी के आधार पर पति के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरू की गई थी। बरघाट एसडीओपी ललित गठरे ने बताया कि महिला की हत्या के बाद से फरार चल रहे पति नितेंद्र का शव आज शाम को गांव के खेत के पास एक कुएं में मिला है। पुलिस ने शव का पंचनामा बनाकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस का मानना है कि चरित्र संदेह के चलते पति ने पहले अपनी गर्भवती पत्नी की गला घोंटकर हत्या की और उसके बाद खुद भी आत्महत्या कर ली होगी।

पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में महिला की गला घोंटकर हत्या किए जाने की पुष्टि हुई। महिला की हत्या के बाद से ही उसका पति नितेंद्र लापता था, जिसके चलते परिजन ने भी उसी पर हत्या की आशंका जताई थी।

एमपी ट्रांसको के सबस्टेशनों में रात्रिकालीन औचक निरीक्षण की पहल से बढ़ी सजगता

राष्ट्रबाण | सिवनी | संवाददाता
rashtrabaan.in

मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) द्वारा सिवनी जिले में सबस्टेशनों की सुरक्षा एवं कार्यप्रणाली में सुधार हेतु शुरू की गई रात्रिकालीन औचक निरीक्षण की पहल लगातार सकारात्मक परिणाम दे रही है। इन निरीक्षणों के बाद सिवनी क्षेत्र के सबस्टेशनों पर तैनात आउटसोर्स कर्मचारियों में कार्य के प्रति सजगता और अनुशासन का स्तर बढ़ा है, वहीं लापरवाही के मामलों में भी उल्लेखनीय कमी आई है। इस पहल से न केवल सुरक्षा में मजबूती आई है, बल्कि यार्ड संचालन एवं कार्य दक्षता में भी महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है।

सुरक्षा के साथ मेंटेनेंस में भी मिला फायदा

एमपी ट्रांसको के अधीक्षण अभियंता निजाम सिंह लोधी ने बताया कि रात्रिकालीन औचक निरीक्षण की यह परंपरा पूर्व मुख्य अभियंता श्री प्रवीण गार्गव के कार्यकाल में प्रारंभ की गई थी। उस समय सबस्टेशनों के ट्रांसफॉर्मरों के न्यूट्रल से जुड़े अत्यंत संवेदनशील एवं बहुमूल्य तांबे की स्ट्रिप और आईसोलेटर के कॉपर ब्लेड चोरी की घटनाएँ सामने आती थीं। सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु शुरू की गई यह पहल अब तक अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई है।

निरीक्षण के दौरान प्रत्येक अधिकारी द्वारा सबस्टेशन का फोटो एवं वीडियो प्रमाण सहित निरीक्षण विवरण विभागीय व्हाट्सऐप समूह में साझा किया जा रहा है, जिससे पूरी प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित हो रही है।

वीडियो कॉल के माध्यम से भी निरीक्षण

श्री लोधी ने बताया कि औचक निरीक्षण के अतिरिक्त, सिवनी जिले के सबस्टेशनों में वीडियो कॉल के माध्यम से भी रात्रिकालीन निरीक्षण किए जा रहे हैं। इससे किसी भी समय, किसी भी स्थान से अधिकारी सबस्टेशन की वास्तविक स्थिति की मॉनिटरिंग कर पा रहे हैं, जो सुरक्षा और निगरानी प्रणाली को और अधिक मजबूत बना रहा है।

रात्रि में यार्ड निरीक्षण का तकनीकी लाभ

उन्होंने बताया कि रात्रिकालीन यार्ड निरीक्षण तकनीकी रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। अंधकार में यार्ड की जाँच के दौरान कई सूक्ष्म गतिविधियाँ दिखाई देती हैं, जिन्हें दिन के उजाले में अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। इससे उपकरणों में संभावित खराबियों का समय रहते पता चल रहा है, जिसके कारण अचानक होने वाले ब्रेकडाउन या आपातकालीन स्थितियों को टालने में सफलता मिली है। साथ ही, मेंटेनेंस कार्य पहले से अधिक योजनाबद्ध और प्रभावी रूप से संपादित हो पा रहा है। इन निरीक्षणों के दौरान अधिकारियों के साथ आउटसोर्स कर्मियों को भी रात्रिकालीन यार्ड निरीक्षण की बारीकियाँ सीखने का अवसर मिल रहा है, जिससे उनकी तकनीकी दक्षता लगातार बढ़ रही है।

इस व्यवस्था में जूनियर इंजीनियर से लेकर अतिरिक्त मुख्य अभियंता तक सभी अधिकारियों को नियमित रूप से औचक निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए हैं। समय-समय पर किए जा रहे ये निरीक्षण सबस्टेशनों की सुरक्षा, विश्वसनीयता और संचालन गुणवत्ता में निरंतर सुधार सुनिश्चित कर रहे हैं। एमपी ट्रांसको की यह पहल न केवल सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इससे सिवनी क्षेत्र में पावर ट्रांसमिशन सिस्टम की गुणवत्ता एवं स्थिरता मजबूत हुई है, जिससे उपभोक्ताओं को अधिक विश्वसनीय एवं निर्बाध विद्युत आपूर्ति प्राप्त हो रही है।

नेशनल लोक अदालत आज

राष्ट्रबाण | सिवनी | संवाददाता
rashtrabaan.in

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं मध्यप्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सिवनी श्री सतीश चंद्र राय के मार्गदर्शन में जिला मुख्यालय सिवनी सहित तहसील लखनादौन, घंसौर एवं केवलारी के न्यायालय परिसर में शनिवार 13 दिसम्बर को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा।

इस लोक अदालत में समझौता योग्य दाण्डिक प्रकरण, चेक अनादरण (धारा-138 एन.आई.ए.), मोटर दुर्घटना दावा प्रकरण, वैवाहिक एवं पारिवारिक प्रकरण, सिविल प्रकरण, विद्युत एवं जलकर प्रकरण, बैंक वसूली प्रकरण, श्रम विवाद, शमनीय विधिक/दाण्डिक अपीलें तथा न्यायालय में लंबित एवं प्रीलिटिगेशन प्रकरणों को रखा जाएगा। इनमें दोनों पक्षों के मध्य आपसी सुलह एवं समझौते के माध्यम से प्रकरणों का निराकरण किया जाएगा।

आयोजित नेशनल लोक अदालत में विशेष रूप से विद्युत प्रकरणों के निराकरण में नियमानुसार बड़ी छूट प्रदान की जाएगी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव श्री रवि नायक ने आमजन से अपील की है कि जिन व्यक्तियों के न्यायालय में या न्यायालय के बाहर प्रीलिटिगेशन स्तर पर प्रकरण लंबित हैं, वे लोक अदालत में उपस्थित होकर आपसी सुलह एवं समझौते के माध्यम से अपने प्रकरणों का निराकरण करा सकते हैं।

नेशनल लोक अदालत में कर जमा करने की अपील

सिवनी। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार 13 दिसंबर 2025 को प्रात: 11 बजे से मानस भवन (नगर पालिका कार्यालय के पास) में नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। नगर पालिका ने करदाताओं से अपील की है कि वे अपने बकाया संपत्ति कर एवं जलकर का भुगतान कर सरचार्ज में दी जा रही छूट का लाभ उठाएँ। साथ ही चेतावनी दी गई है कि 10,000 रुपये से अधिक बकाया रखने वाले करदाताओं के नाम स्थानीय समाचार पत्रों एवं नगर के प्रमुख स्थानों पर प्रकाशित किए जाएंगे।

नगर पालिका ने नागरिकों से अनुरोध किया है कि किसी भी प्रकार की अप्रिय स्थिति से बचने हेतु 13 दिसंबर 2025 को मानस भवन में आयोजित नेशनल लोक अदालत में अपने बकाया कर जमा करें।

आबकारी विभाग ने जप्त की 72 बोतल विदेशी शराब

राष्ट्रबाण | सिवनी | संवाददाता
rashtrabaan.in

कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले निर्देशन में जिला आबकारी अधिकारी विनोद खटीक के मार्गदर्शन में जिले में अवैध शराब पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में विभाग की टीम ने धारना क्षेत्र से सिवनी आ रही एक मारुति वैगन आर कार से छह पेटी विदेशी शराब जब्त की है। जिला आबकारी अधिकारी द्वारा बताया गया कि गश्त के दौरान विभाग को सूचना मिली थी कि एक लाल रंग की वैगनआर कार में अवैध शराब बरघाट या सिवनी लाई जा रही है। जानकारी मिलते ही टीम ने तुरंत बरघाट की ओर दबिश दी और सेलुआ टोल नाका के पास वाहन क्रमांक स्क्ष 04 ष्स्न 6483 को रोककर तलाशी ली। जांच के दौरान कार से छह पेटियों में कुल 72 बोतल विदेशी शराब बरामद हुई, जिसकी मात्रा 54 बल्क लीटर है।

जब्त शराब में बकार्डी ब्लैक रम, मैकडॉवेल नंबर-1 रम, रॉयल स्टैग व्हिस्की, माइलस्टोन ब्लू व्हिस्की और ऑफिसर्स च्वाइस व्हिस्की की कुल 72 बोतलें शामिल हैं। कार और शराब को जप्त कर आरोपी एहसान खान (पिता शेख जमील), उम्र 32 वर्ष, निवासी अमानगंज वार्ड नंबर 15 बरघाट के खिलाफ मध्य प्रदेश आबकारी अधिनियम 1915 की धारा 34(1) एवं 34(2) के तहत प्रकरण दर्ज किया गया। आरोपी को मौके पर ही गिरफ्तार कर न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया है। जब्त सामग्री की अनुमानित कीमत लगभग 2 लाख 10 हजार रुपये बताई गई है।

कार्रवाई में सहायक जिला आबकारी अधिकारी प्रणय श्रीवास्तव, उप-निरीक्षक खुशबू प्रिया मरावी, मुख्य आरक्षक तीरथ सिंह, आरक्षक लेखसिंह टेकाम, आनंद मरावी, संत राम मरावी और मुकेश अहिरवार शामिल रहे।

दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान द्वितीय चरण 17 से प्रारंभ होगा

सिवनी। उपसंचालक पशुपालन एवं डेयरी विभाग सिवनी द्वारा बताया गया कि मध्यप्रदेश में वर्तमान में दुग्ध उत्पादन देश का लगभग 9 प्रतिशत है, जिसे प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की मंशा अनुसार 20 प्रतिशत तक बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया है। इसी उद्देश्य से राज्य में दुग्ध समृद्धि संपर्क अभियान का द्वितीय चरण 17 दिसंबर 2025 से सभी जिलों में प्रारंभ किया जा रहा है। इस दौरान पशुपालन विभाग का अमला तथा मैत्री/गौसेवक घर-घर पहुंचकर पशुपालकों को पशु पोषण, स्वास्थ्य और प्रजनन (नस्ल सुधार) संबंधी

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक संजय बघेल द्वारा श्री सिद्धिविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एमपी नगर भोपाल म.प्र से मुद्रित कराकर शिवनगर कॉलोनी सड़क मोहल्ला मरझोर जिला सिवनी से प्रकाशित।
RNI NO.: MPHIN/2015/72804 , **संपादक* संजय बघेल** पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र सिवनी होगा। E-mail: rashtrabaan@gmail.com. mob: 7000427433